श्री देश हितकारी पुस्तकमालाको
१०१) देकर माला के
प्रथम सहायक होने वाले
श्रीमान् ठाकुर कल्याणसिंह जी बी०ए०
मु० खाचरियावास फोर्ट
जयपुर स्टेट।
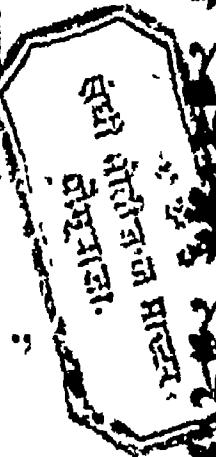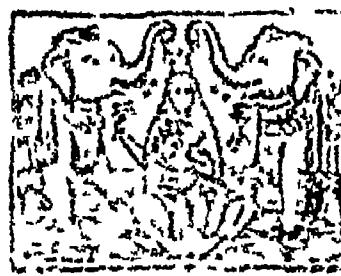
मुद्रक
☞ बाबू कपूरचन्द जैन,
महावीर प्रेस, आगरा।

देश-हितकारी-पुस्तक-माला नं० ३

॥ श्री परमात्मने नमः ॥

कमल किशोर नाटक ।
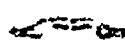
लेखक व प्रकाशकः—
सुरेन्द्रचन्द्र जैन "वीर"
पद्मावती पुरवाल
मालिक देश हितकारी पुस्तक माला
लोहामंडी, आगरा ।

प्रथम बार १००० } सन् १९२३ ई० { मू० प्र० पु० ।≈) आना ।

नाटक के पात्र ।

नट ।

रतनसिंह—	राजपुर का राजा
कमल किशोर—	राजा का पुत्र और नाटक का प्रधान नट
धनदेव—	राजा का प्रधान मंत्री
राजकुमार—	मंत्री का लड़का और कमलकिशोर का दोस्त ।
पन्नालाल, रामकुमार	राजकुमार के दोस्त ।
श्यामसिंह—	रामपुर का राजा और किशोरी का पिता
केशव—	श्यामसिंह का पुत्र
सत्यसिंह—	आनन्दपुर का राजा और किशोरी का मामा
दुर्गासिंह—	दुर्गापुर का राजा
मानसिंह—	मानपुर का राजा
दुर्जनसिंह—	राजपुर का प्रधान कोतवाल
चुन्ना, मुन्ना	एकगांव के रहने वाले ग्वाला

मंत्री-पिरोहित-दरबान-दूत-बालक इत्यादि २ ।

नटी ।

कमला—	रतनसिंह की स्त्री
जानकी—	श्यामसिंह की स्त्री
किशोरी—	श्यामसिंह की पुत्री और नाटक की प्रधाननटी
तारा—	किशोरी की प्रधान टहलेनी
भूदेवी, रामप्यारी, लाड़ो, कस्तूरी	किशोरी की सखियां

पिरोहिताइन, मालिन, वैश्य, एं इत्यादि २ ।

नाटक के विषय में लेखक के दो शब्द।

प्रिय पाठक वर्ग !

आज आपके समक्ष अपनी छोटीसी कृति सामाजिक नाटक कमलकिशोर को लेकर उपस्थित हुवा हूं यद्यपि हिन्दी नाटकों में इसी विषय के अंजनासुन्दरी सुखानन्द मनोरमा आदि कई नाटक हैं. किन्तु उनमें कुछ धार्मिक पक्ष होने से प्रत्येक व्यक्ति उनसे लाभ नहीं उठा सक्ता. दूसरे उनमें मनोरंजन करने वाले तथा शिक्षाप्रद गायनों और अच्छी २ उपदेशिक राष्ट्रीय बातों का प्रायः अभावसा है. उनमें श्रृंगार रसकी भी कुछ कमी है. जोकि काव्य या नाटक का सौन्दर्य और प्रधान अंग समझा जाता है. मै यह नहीं कहता कि उनका विषय या लेखन शैली अच्छी नही है। हां! पर इतना जरूर है कि उनमें वर्त्तमान नई हवा के अनुसार गाना वगैर नहीं है. अस्तु. यह नाटक एक कल्पित नाटक है. इसमें जो विषय आदि से जिसढंगपर उठाया गया है उस विषय को उसीढंग पर अन्त में पूरा करने की पूरी २ कोशिश की गई है. नाटक के प्रधान नट और नटी का चरित्र जैसा होना चाहिये वैसाही वर्णन किया गया है. किशोरी का पति-प्रेम, और धैर्यता, कमल किशोर की शरणागत की रक्षा, और स्वदेशी वस्तुओं से प्रेम, तथा सांसारिक झगड़ों से उदासीनता, नीति का राज्य हानिकारक प्रथाका उठाना, राजकुमार की मित्रता और तारा की कुटिलता, तथा दुर्जन सिंह के गन्दे विचार, और दोनों को दण्ड का मिलना, कमला और

रतनसिंह के पाप का फल, मानसिंह का अहंकार दुर्गासिंह को मातृभूमि से प्रेम श्यामसिंह की नम्रता और सत्यसिंह का वात्सल्य इत्यादि बातों से यह नाटक कैसा है यह पाठकों को अवलोकन करने से अच्छी तरह से मालुम हो जायगा। इतने पर भी इसमें स्थान २ पर चित्त को प्रफुल्लित करने वाली नैतिक उपदेशिक आदि भांति भांति की कविताएं दी गई हैं, और भी जहां तक मुझसे होस का है, नाटक की भाषा सरल और सीधी बोल चाल में ही लिखी है. फिरभी सम्भव है कि नाटक सम्बन्धी बहुत सी त्रुटियां इस नाटक में रहगई हों. मैं कोई हिन्दी का प्रसिद्ध लेखक या कवि तथा नाटककार नहीं हूं. मैंने केवल हिन्दी माता की पवित्र भक्ति और कई योग्य सज्जनों के विशेष आग्रह से इस नाटक के लिखने का उत्साह किया है. अगर इस मेरी प्राथमिक तुच्छ कृतिको विज्ञ पाठकों ने अपना कर मेरे उत्साह को बढ़ाया तो मैं भी अपने इस परिश्रम को सफल समझूंगा. अन्तमें मैं निष्पक्ष विद्वानों और पत्र सम्पादकों से सविनय निवेदन करता हूं कि एकबार इस नाटक को आदिसे अन्त तक पढ़ने का कष्ट अवश्य उठावें. और फिर समालोचना करें. तथा त्रुटियों की मुझे सूचना दें ताकि आगामी संस्करण में ठीक कर दी जांय. इत्यलं विशेषु.

नगला सरूप
मि० श्रावण शुक्ला
पूर्णिमा

निवेदक—
सुरेन्द्र चन्द्र जैन, "वीर"

कमलकिशोर नाटक।

पहला अंक

पहला दृश्य।

स्थान—रामपुर में श्यामसिंह का शयनागार।

समय—दोपहर।

[श्यामसिंह पलंग पर लेटे हुए हैं और नीचे की तरफ़ जानकी बैठी है]

श्याम—किशोरी की मा !

जानकी—कहिये क्या आज्ञा है ?

श्याम—क्या तैंने कुछ नहीं सुना ?

जानकी—नहीं तो !

श्याम—किशोरी के सवाल का जवाब किसी ने नहीं दिया।

जानकी—सो कैसे मालुम हुआ।

श्याम—पिरोहित जी ने आकर कल शाम को ही कहा है कि बहुत जगह गया लेकिन सवाल का जावब किसी ने नहीं दिया।

जानकी—तो अब क्या करना होगा ?

श्याम—क्या बताऊं ?

जानकी—आखिर को विवाह तो करना ही पड़ेगा।

श्याम—देखो मेरी समझ में तो एक बात आती है।

जानकी—वह कौन सी ?

श्याम—यदि किशोरी यह हठ छोड़ दे।

जानकी—यह बात असम्भव है !

श्याम—तुम कहना तो सही।

जानकी—अच्छा कहूंगी, देखो किशोरी भी आ रही है।

[श्यामसिंह सोने के बहाने से दुशाला ओढ़ लेते हैं]

(हंसते हुए किशोरी का प्रवेश)

किशोरी—मा !

जानकी—आओ बेटी ! (बैठ जाती है)

किशोरी—माजी आज पिताजी अभी से क्यो सो रहे हैं।

जानकी—योंही सो गये हैं।

किशोरी—कुछ कारण तो होगा ही ?

जानकी—कुछ भी नहीं बेटी !

किशोरी—मा ! जबतक आप यह बात नहीं बताओगी तब तक मैं कुछ भी खाना पीना नहीं करूंगी।

(भाव पलट के)

जानकी—हां तेरे पिताजी की तबियत कुछ २ उदास सी तो मालूम होती थी।

किशोरी—पूछा तो होगा क्या बात है ?

जानकी—हां पूछा था पर कुछ बताई नहीं जाती

किशोरी—कुछ तो कहिये क्या हुआ ?

जानकी—क्या कहूं बेटी पिरोहित जी कई जगह गये लेकिन तेरे सवाल का जबाब !

(चुप रह जाती है)

किशोरी—फिर क्या हुआ माजी !

जानकी—हुआ क्या किसी ने नहीं दिया ।

किशोरी—तो अब क्या होगा ?

जानकी—तुम्हारा विवाह ।

किशोरी—सो कैसे !

जानकी—अगर तुम अपनी हठ छोड़दो ।

किशोरी—ऐसा कदापि नहीं हो सकता ।

जानकी—क्यों क्या हर्ज है ?

किशोरी—मैं तो बिना उत्तर पाये विवाह नहीं करूंगी ।

जानकी—नहीं करोगी बेटी !

किशोरी—कभी नहीं माजी !

जानकी—तो बिना विवाह के सारी उमरभर कैसे रह सकोगी ?

किशोरी—मैं ब्रह्मचर्य व्रत की सर्वदा के लिये शरण ग्रहण करूंगी

जानकी—इस हठ को छोड़दे किशोरी !

किशोरी—ऐसा नहीं हो सकता यह तो मेरी अटल प्रतिज्ञा है ।

जानकी—मानजा बेटी ।

किशोरी—बस ज्यादा मत कहो माजी !

(उठकर के चली जाती है)

जानकी—(श्यामसिंह से) सुना जी ?

श्याम—हां सुना तो सही ।

जानकी—वह तो नहीं मानती ।

श्याम-तो क्या किया जाय ?

जानकी-तो क्या वह हमेशा क्वारी ही रहेगी।

श्याम-और क्या होगा ?

जानकी-मुझपर तो स्त्रियों के उलाहने नहीं सहे जाते।

श्याम-कैसे उलाहने ?

जानकी—कैसे क्या सभी कहती हैं कि किशोरी इतनी बड़ी हो गई लेकिन अभी तक विवाह नहीं किया क्या सदा यों ही रहेगी ?

श्याम—इसमें मेरा तो कुछ वश नहीं चलता तू कहे सो करूं।

जानकी—करोगे क्या ?

श्याम—हां यही तो पूछता हूं।

जानकी-पिरोहित जी से कहो कि वे जिधर नहीं गये उधर जांय

श्याम-जरूर कहूंगा।

जानकी-जरूर कहिये।

श्याम-आप निश्चय रखिये मैं जरूर कहूंगा।

जानकी-एवमस्तु! यह कौन ? अरे केशव आ रहा है।

(उठकर के चली जाती है)

[केशव का प्रवेश]

केशव-प्रणाम पिता जी !

श्याम-आओ बेटा केशव !

(बैठ जाता है)

आज इतने वक्त कहां से आरहे हो ?

केशव---मोहन बाग से।

श्याम --तो यहां क्यों आये ?

केशव-यों कि उधर से लौट कर आ रहा था इतने में पुरोहित जी मिल गये।

श्याम-उन्होंने कुछ कहा है क्या ?

केशव-यों कहा है कि अपने पिता जी से कहदो कि मैं इस वक्त किसी जरूरी काम के लिये आपसे मिलना चाहता हूं।

श्याम—यही काम था ?

केशव—बस यही था।

श्याम—तो पुरोहित जी को आने को कहदो !

केशव-अच्छा जाता हूं पिता जी !

(प्रस्थान)

[कुछ २ मुसकराते हुये पुरोहितजी का प्रवेश]

पुरोहित-महाराज की जय हो !

श्याम-आइये ! (उच्चासन देता है)

कहिये इस वक्त आने की क्यों तकलीफ उठाई ?

पुरो०-कुछ तकलीफ नहीं आप बिलकुल रंज छोड़दें, भगवान अच्छी करेंगे।

श्याम—रंज तो सिर्फ इसी बात का है कि किशोरी क्वारी रह जायगी।

पुरो०-ऐसा नहीं होगा।

श्याम-क्यों ?

पुरो०-मैं भी तो कहता हूं आप आनन्द से रहिये।

श्याम क्या तरकीब सोची है ?

पुरो०-सोची क्या है मैं कुछ सुबह पूरब की तरफ जाऊंगा।

श्याम-जाने से क्या फायदा ?

पुरो०-कोई न कोई तो जरूर ही प्रश्न का उत्तर देगा।

श्याम—यदि ऐसा नहीं हुआ तो ?

पिरो०—नहीं हुआ तो आगे दैवाधीन है ।

यत्नेकृत यदि न सिद्धति कोत्र दोषः ।

श्याम—बहुत अच्छा !

पिरो०—अब समय अधिक होने आया है आप भी भोजन वगैरह कीजिये मैं भी जाता हूं ।

श्याम—कल प्रभात जरूर जाइये ।

पिरो०—जरूर जाऊंगा अब आज्ञा दीजिये ।

श्याम०- अच्छा पधारिये । (प्रस्थान)

पहला खण्ड ।

दूसरा दृश्य ।

स्थान—राजपुर-राजकुमार का बैठकखाना ।

समय—सायं-काल

[सामने की कुर्सी पर राजकुमार बैठा है और पास ही में पड़ी हुई एक कुर्सी पर घन्नालाल तथा दूसरी पर रामकुमार बैठे हैं]

राज—कहिये मिष्टर घन्नालाल क्या नये समाचार हैं।

घन्ना—नये समाचार क्याजी समाचार पत्र पढ़ने के लिये तो फुर्सत ही नहीं मिलती नये समाचार कहां से आवें ।

राज—एक आपकी नई बात सुनी है ।

घन्ना कौनसी ।

राज—सुना है कि आप गाने में भी निपुण हैं ।

घन्ना—अजी नहीं कोई मजाक करता होगा ।

राज—नहीं साहिब मैंने एक भले आदमी के मुंह से सुना है । क्यों जी (रामकुमार से) आपको भी झूंठ मालुम पड़ती है ।

राम—वाह इसमें झूंठ की कौनसी बात है । कल मैंने (घन्नालाल से) आपको मण्डली में गाते हुए देखा था न ।

घन्ना—आप अपनी क्यों छिपाते हैं ।

राम—आप कहें सो ठीक है, लेकिन आपतो नाचना भी जानते हैं ।

धन्ना--अजी अबतो आप अंगुली पकड़ के पोंचा पकड़ने लगे।

राम--हः हः हः (हंसता है) मैंने आप से क्या कहा है।

धन्ना--आपतो अब मजाक करने को उतारू होगये देखिये (राजकुमार से) साहिब।

राज--(रामकुमार से) रहने दो भाई इनसे ज्यादह छेड़ खानी मत करो वरना ये रूठकर घरको भाग जांयगे।

(धन्नालाल से) अच्छा जी आपतो अब एक दो मन हरने वाला कोई राग सुनाइये।

राम--(धन्नालाल से) जनाब इतने गानादने क्यों करवाते हो, जरा गादो क्या तुम्हारा कुछ बिगड़ जायगा।

राज--(रामकुमार से) थोड़ी देर के लिये आप खामोश रहिये, वे गाते हैं ऐसी कौनसी जल्दी है अभीतो नहीं रहे हो।

धन्ना--आपकी अगर यही मर्जी है तो सुनिये।

(गाता है)

कीजे नरभव पाके धर्म न जाने कब अन्तिक आखि जाय।

राज--बस जनाब इस देहाती गाने को रहने दीजिये कोई एक अच्छी सी गजल या कव्वाली सुनादो।

धन्ना--गजल या कव्वाली का गाना तो मैं जानता नहीं।

राज--हर बात मे नहीं जानता नहीं जानता कहकर के टाल देते हो, अच्छा अब बहुत क्यों कहलवाते हो गाइये न।

धन्ना--हालांकि मैं इस तरह का गाना नहीं जानता तो भी आपका हुक्म क्या टाल सक्ता हूं सुनिये।

(फिर से गाता है)

(कव्वाली)

[चाल—वसूके लाल गिरधारी बहादुर हो तो ऐसा हो।]

भलाई दूसरे की नित हमें करना मुनासिब है।
अनाथों की मदद करना विपति हरना मुनासिब है ॥टेक॥
बड़ी चंचल है लक्ष्मी ये न इसका मान तुम करना।
इसे शुभ काम में निशदिन लगाना ही मुनासिब है॥
आज इसकी है कल उसकी किसी के नित न रहती है।
भोगना दान करना ही सदा इसका मुनासिब है॥
करो उपकार दुखियों का इसी में ही भलाई है।
सफल शुभ कामसे धनको बनाना ही मुनासिब है॥
ठहरनी चंद रोजा है इसे मत मानना अपनी।
लगाना काम अच्छे में इसे सबको मुनासिब है॥
बड़े मूरख हैं वे नितजो इसे अपनी बताते हैं।
"वीर" दुखिया को सुख देना यही सबको मुनासिब है॥

राज—वाह वाह साहिब वाह वाह।

आपतो कहते थे मै गाना जानता ही नहीं, आपतो गाने में गौहर जान को भी मात कर गये। अच्छा जी (रामकुमार से) इनकी ड्यूटी तो खतम हुई अब आप का नम्बर है।

राम—ओहो आपतो अब दोनों हाथों से मजा लूटना चाहते हैं।

राज—नहीं तो क्या एक हाथ से।

धन्ना—(रामकुमार से) औरत तो नहीं हो जो तुम्हारा लहँगा उतर जायगा। शर्म को छोड़ कर जरा एक दो तान सुना दो।

राम—(दोनोंसे) अच्छा आपकी यही मर्जी है तो लीजिये सुनिये।

(गाता है)

(गज़ल)

[चाल—बीमार हो रहा हूं औषध मुझे मंगादे।]

जिसको बता रहा है तू मित्र बन्धु प्यारे।
क्या नारि पुत्र पुत्री ये स्वारथी हैं सारे ॥टेक॥
जब धन न पास होवे तब नारि रोष करती।
विपरीत नित्य चलती आज्ञा न चित्त धारे॥
जब तक हो पास पैसा सब मित्र आ बनेंगे।
जब पास ये न रहता होते हैं शीघ्र न्यारे।
जब द्रव्य पास होगी सेवा करेंगे सुत भी।
इसके बिना बनेंगे वे हाल घर से न्यारे॥
सब स्वारथी हैं जग में क्या जानता है मूरख।
हैं "वीर" एक दम से मानिन्द नाग कारे॥

राज—वाह क्या कहना है।

धन्ना—आः क्या बात है सुभान् अल्ला:।

राज—फर्माइये तो सही ऐसा गाना आप ने कहां से सीखा।

धन्ना—(राजकुमार से) अजी आप क्या नहीं जानते ये बड़े भारी रसिक हैं और गवैयों के बादशाह हैं।

राज—ओहो यह बात है तबतो आप बड़े होशियार हैं।

चन्ना—नहीं तो आप क्या इनको कोरे उल्लू नाथ ही समझतेथे।

राज—नहा जी (इशारा करके) देखो ये कुमार कमल किशोर जी आ रहे हैं।

(उदासीन भाव से कमल किशोर का प्रवेश)

राज—आइये शाहजादे साहिब (उठ कर हाथ मिलाता है) (कमल किशोर एक सुन्दर कुर्सी पर बैठ जाते हैं)।

कमल—क्यों जी राज कुमार अकेले ही मजा लूटना जानते हो।

राज—हो कैसे जाना।

कमल—मैं भी बाहर दालान में खड़ा २ सुन रहा था।

राज—ओहो' तब तो आप बड़े धोखे से काम लेते हो खैर! यह बतलाइये आज आप इतने उदास क्यों हैं।

कमल—इा दो एक दिन से मेरी तबियत कुछ २ खराब सी रहती है।

राज—तो भी क्या बात है।

कमल—कह नहीं सकता क्या बात है पिता जी ने तो यही कहा था।

राज—क्या कहा था।

कमल—कि तुम रोज आराम बाग में घूमने जाया करो।

राज—ऐसा क्यों कहा।

कमल—इसलिये कि बाग की हवा अच्छी होती है।

राज—तब तो जरूर ही जाना चाहिये।

कमल—हां रोज जाया करूंगा तबियत भी ठीक हो जायगी।

राज—अगर आपकी तबियत बहुत ही ज्यादा खराब रहती तो डाक्टरी दवा क्यों नहीं लेते आपके यहां तो हजार रुपये रोज का डाक्टर रहता है।

कमल—सुनिये पहिले तो डाक्टरी दवा बिलकुल ही अपवित्र वस्तु है। दूसरे विलायती दवाइयां हिन्दुस्तानियो के मुवाफिक नही। भले आदमियो को तो उसे छूना तक भी नहीं चाहिये। भारत मे जो आजकल मृत्यु दिन बदिन जोर पकड़ रही है वह सब इस दवा ही की बदौलत है। इसी तरह जितनी भी विलायती (विदेशी) चीजे हैं सब की सब ही बिल्कुल अपवित्र हैं जिनमे सैकड़ों जीवो की हिंसा होती है भला वे कैसे पवित्र कही जा सकती हैं। कुलीनता का दावा रखने वाले पुरुषो को तो इन सबको एक दम से त्याग देना चाहिये नितान्त हिंसा से रहित अपनी देश की वस्तु ही उत्तम तथा ग्रहण करने योग्य है वास्तव में हिन्दू उसी को कहते है जो सर्व प्रकार की हिंसा से दूर हो। आज कल की इस भड़कीली सभ्यता ने ज्ञान धन बल एकत्रित करके भारत चमन को इसकी जड़ काट के वीरान कर दिया है। इससे बढ़कर तो मद्य मांस आदि ऐसी २ चीजों ने धन व धर्म तथा बल हरके एकदम दुराचारी और कायर बना दिया है अधिक क्या कहें। भगवन् यह सभ्यता भारत से कब विदा होगी।

राज—खूब ही कहा तो यह तो बताइये कि आपके पिता जी क्यों एक हजार रुपये रोज व्यर्थ खोते हैं और अपने राज्य में क्यों सब ऊपर के कार्य होने देते हैं।

कमल—पिता जी को तो इन कामो मे भलाई या बुराई होती है यह सोचने को वक्त नहीं मिलता। मैं निश्चय से कहता हूं कि जिस समय मै गद्दी पर बैठूंगा उस समय से ऐसी २ कुरीतियों का सदा के लिये नाम खोदूंगा।

(नेपथ्य से शाहजादे साहिब की जय हो आवाज आती है)

राज—तो देशी दवाई भी क्यों नहीं लेते उसमें क्या हानि है ।

कमल—ठीक है ! जब प्राकृतिक चिकित्सा से ही आराम हो जावे तो देशी दवाई भी लेने की क्या आवश्यकता है ।

राज—तब तो आप प्राकृतिक चिकित्सा के भी अच्छे जानकार मालूम होते हैं ।

कमल—नहीं जी प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी दो एक पुस्तक पढ़ी जरूर थीं ।

राज—तो मैं भी आज से तमाम विदेशी चीजों का त्याग करता हूं ।

धन्ना—मैं भी ऐसी अपवित्र वस्तुओं को सदा के लिए छोड़ता हूं ।

राम—मैं भी ऐसी हिंसायुक्त चीजों का जन्म भर के लिए त्याग करता हूं शाहजादे साहिब ।

(नेपथ्य से चिरंजीव रहो बेटा आवाज आती है)

कमल—अच्छा अब वक्त ज्यादा हो गया महल तक पहुंचना है, फिर कभी मिलेंगे ।

राज—जो आज्ञा बेशक पधारिये ।

(सब अपने २ घर को जाते हैं)

पहला खण्ड।

तीसरा दृश्य।

समय—प्रातः काल।

स्थान—रामपुर में पिरोहित जी का मकान।

[पिरोहित जी एक चौकीपर बैठे है और पास ही नीचे की तरफ पिरोहिताइन जी बैठी है]।

पिरोहिता—कहिये पिरोहित जी आज इतने जल्दी क्यो उठे आप का मुख कमल भी किसी गहरी चिंता में व्यस्त दीख रहा है।

पिरोहित—हां आज कही बाहर जाने का विचार है।

पिरोहिता—अब कहां जाने का विचार है क्या अभी तक वह आपका काम पूरा नहीं हुआ।

पिरोहित—नहीं अभी नहीं हुआ।

पिरोहिता—पहिले किस २ तरफ को गये थे।

पिरोहित—एक पूर्व दिशाको छोड़ कर तीनों दिशा मे हर नगर हर ग्राम देख लिया लेकिन......

पिरोहिता—लेकिन क्या?

पिरोहित—किशोरी के प्रश्न का उत्तर!

पिरोहिता—तो फिर।

पिरोहित—फिर क्या किसी ने नहीं दिया।

पिरोहिता—जो अब तक कहीं कोई उत्तर नहीं दे सका वो अब कोई उत्तर दे यह असम्भव बात है।

पिरोहित—नहीं अबकी दफे जरूर ही यह काम सिद्ध हो जायगा।

पिरोहिता—सो कैसे मालुम हुआ।

पिरोहित—आज थोड़ी सी रात शेष रही थी। उसी समय मुझे यह स्वप्न आया था।

पिरोहिता—कैसा स्वप्न!

पिरोहित—यही कि पूर्व दिशा में जाने पर यह कार्य जरूर ही बन जायगा।

पिरोहिता—तब तो बहुत ही अच्छी बात है।

पिरोहित—देखो मुझे आज जाना है।

पिरोहिता—इतनी जल्दी क्यों ? कलतो आये ही हो।

पिरोहित—ठहर नहीं सक्ता राजा साहिब से कल वायदा कर आया हूं।

पिरोहिता—क्या वायदा।

पिरोहित—यही कि कल सुबह में पूर्व को जरूर जाऊंगा देखो घर पर होशियार रहना!

पिरोहिता—आप कितने दिनों में वापिस आएंगे।

पिरोहित—कह नहीं सक्ता कितने दिन लगजांय। अगर काम जल्दी बन गया तो जल्दी ही आऊंगा। कुछ फिकर मत करो आनंद से रहना।

पिरोहिता—आपके चरणों के प्रसाद से सदा ही आनन्द से रहती हूं लेकिन—(चुपरह जाती है)

पिरोहित--कहिये चुप क्यों रहगई।

पिरोहिता--चुप क्या रह गई दुखतो केवल यही है कि आपको परदेश से न मालुम कितनी तकलीफ उठानी पड़ती होगी।

पिरोहित--कुछ तकलीफ नहीं होती अगर होवे भी तो यह राज कार्य है कुछ डर नहीं। अच्छा अब समय ज्यादा हुआ चाहता है। अब जाना ही ठीक है।

पिरोहिता--अच्छा जो आपकी मर्जी बेशक पधारिये आपके इस कार्य में परमात्मा मदद करे।

पिरोहित--तथास्तु।

(पिरोहित जी का प्रस्थान)

पहला खण्ड ।

चौथा दृश्य ।

स्थान—राजपुर का आराम बाग ।

समय—सायंकाल ।

(बाग की एक रौंसपर कमलकिशोर टहल रहे हैं)

कमल—अहा इस बाग की क्या ही उत्तम स्वास्थ्य प्रदायनी हवा है । पहले हमारे बुजुर्ग लोग जंगलों में तथा ऐसे ही अच्छे २ स्थानों पर रहते थे । प्राकृतिक चिकित्सा में वे सदा तल्लीन थे उनको कभी औषधादि लेने की सख्त जरूरत न थी । कितने दीर्घ जीवी तथा पुरुषार्थ युक्त होते थे । अपनी देश की बनी हुई पवित्र वस्तु का ही उपभोग करते थे । वे एक दूसरे को हमेशा अपना ही समझते थे तथा दूसरे के दुख में दुखी और सुख में सुखी थे और क्रोध मान माया मात्सर्य उनके पास कभी टिकने भी न पाते थे उस समय ही यह हमारा प्यारा भारत सच्चा भारत अर्थात् शोभा करके युक्त था । राजा प्रजा की पुत्रवत् रक्षा करता था । प्रजा का शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक बल बढ़ाने में एवं ऐसे २ शुभ कार्यों में ही उसका धन लगता था परमेश्वर आज वे दिन यहां स कहां किनारा कर गये जगन्नाथ! अब शीघ्र

ही भारत पर अपनी कृपा दृष्टि पसारिये नही तो हमारे पतन में अब ज्यादा दिन नहीं रहे हैं। अब तो बिल्कुल ही भारत गारत हो चला है। इसका केवल नाम ही नाम शेष है करुणा निधान रक्षा करो!

(चुप रह जाता है)

पिरोहित जी इसी बाग की सामने वाली सड़क पर से आते हैं और बाग को नजदीक देख कर खड़े रह जाते हैं।

पिरोहित—आहा क्या ही अच्छा हवादार बाग है मैं सुबह का चला हुआ खूब ही थक गया हूं। और सुबह से कुछ खाया पीया भी नहीं है। अब ज्यादा आगे चलने के लिये दिन भी नहीं दीखता। अब तो इसी बाग में चल के खाना पीना करूं और आज रात की रात यहीं पर विश्राम लूं। (आगे बढ़ता है और बाग मे पहुँचकर लोटा डोर निकाल के हाथ मुंह धोता है तथा पास के एक पत्थर के चबूतरे पर बैठके खाना खाने लगता है और खाना खा पीकर बाग की एक सुन्दर रौस पर टहलता है) -
(मन में) ओहो कैसी महक आरही है अरे यह तो किसी राजे महाराजे का सा बाग मालूम होता है। (सामने कमलकिशोर को देखके आश्चर्य के साथ) ओः यह तो कोई राजपुत्र जान पड़ता है।

चलकर दर्याफ्त तो करू (धीरे २ टहलता हुआ कमलकिशोर के पास आता है और मौका पाकर पूछता है) कुंवर साहिब इस शहर का क्या नाम है।

कमल—इसको राजपुर कहते हैं ।

पिरो०—यहां के राजा कौन हैं ?

कमल—यहां के राजा रतनसिंह जी हैं ।

पिरो०—आपकी तारीफ कुंवरसाहिब ?

कमल—मैं राजा रतनसिंह जी का पुत्र हूं ।

पिरो०—आपका शुभनाम शाहजादे साहिब ?

कमल—मुझे कमलकिशोर कहा करते हैं ।

(चुप रह जाता है)

पिरो०—(मन में) अहा: सचमुच में ही यह कमलकिशोर है। इसका मुख कमल चन्द्रमा के समान निर्मल तथा कांति युक्त कैसा सुहावना मालुम होता है इसके दांतों की पंक्तियां अनार के दानों की बराबर कैसी स्वच्छ हैं। इसका नेत्र युगल मृग के नेत्रों की समता धारण करता है । इसकी नासिका तोते की नासिका के तुल्य है । शिर के घुंघुराले बाल अपूर्व ही छटा दिखाते हैं । इसकी ग्रीवा शंख की उपमा धारण करती है । इसकी छाती केहरी (सिंह) सरीखी जान पड़ती है । भुजा कैसी विशाल हैं मानों दुष्ट रूपी पर्वतों को वज्र ही हों । इसके सौन्दर्य का कहां तक वर्णन करूं ईश्वर ने चाहा तो मेरा मनोरथ यहीं सिद्ध हो जाय ।

(प्रगट)

आप का विवाह हो गया शाहजादे साहिब ?

कमल—नहीं अभी नहीं हुआ है ।

पिरो०—(मन में) ओहो ! तब तो मेरा काम बीसौ बिषै बना हुआ दीखता है ।

(प्रगट)

शहजादे साहिब—आपकी इस चाल ढाल तो मालुम होता है कि आप पढ़े लिखे भी हैं।

कमल—हां आपकी कृपा से थोड़ा बहुत जानता हूं।

पिरो०—मेरा एक प्रश्न है अगर आप उत्तर दें तो।

कमल—बेशक फर्माइये जहां तक मेरी अक्ल दौड़ेगी आप का उत्तर जरूर दूंगा।

पिरो०—तो सुनिये।

कमल—फर्माइये।

(पिरोहित प्रश्न करता है)

॥ दोहा ॥

कौन चीज संसार में सबसे उत्तम एक।
पैदा होती है कहां जामें सुगुण अनेक॥

कमल—बस यही आपका प्रश्न था। ह: ह: ह: (हंसता है)

पिरो०—बतलाइये शहजादे साहिब ?

पिरो०—जी हां

कमल—सुनिये।

(कमलकिशोर उत्तर देता है)

॥ दोहा ॥

सबसे उत्तम प्रेम है दुनियां के दर्म्यान।
पैदा होता चित्तसे केवल गुणकी खान॥

(नैपथ्य से धन्य है कमलकिशोर धन्य है आवाज आती है)।

कमल—यही है न आपके प्रश्न का उत्तर ।

पिरो०—बेशक यही है ।

कमल—और भी दो एक पूछिये ।

पिरो०—बस यही पूछना था ।

कमल—आपकी मर्जी ।

पिरो०—मैं आपके पिताजी से मिलना चाहता हूं शाहजादे साहिब

कमल—कल दोपहर के समय दरबार में जरूर तसरीफ लाइये और राजा साहिब से भी मिलिये ।

पिरो०—जो आज्ञा ।

कमल—अब समय ज्यादा हो गया है इधर मुझे भी शहर तक जाना है आज रातको आप इसी बाग के एक कमरे में आराम कीजिये मुझे तो अब इजाजत हो ।

पिरो०—हां पधारिये (कमलकिशोर जाता है और पिरोहित जी एक कमरे में जाकर सो जाते हैं) ।

पहला खण्ड ।

पांचवां दृश्य ।

स्थान—राजपुर का शाहीदरबार ।

समय—दोपहर

[दरबार लग रहा है और राजा रतनसिंह एक मनोहर सिंहासन पर बैठे हुए हैं, सीधे हाथकी तरफ कमलकिशोर

और डेरे हाथकी तरफ मंत्री धनदेव बैठे हैं तथा अन्य सभासद अपने २ योग्य स्थानों पर बैठे हुये हैं]।

रतन—मंत्री साहिब।

मंत्री—फर्माइये महाराज।

रतन—क्या कभी आपने उस विषय पर विचार किया है ?

मंत्री—कौनसा विषय।

रतन—यही विषय कि कमलकिशोर अब ठीक विवाह के योग्य हो गये हैं।

मंत्री-हां कुंवर साहिब अब ठीक विवाह के योग्य हैं और हर एक बात में चतुर भी हैं।

रतन-तो कहीं कोई ऐसी ही योग्य राज कन्या तलाश करनी चाहिये।

मंत्री-यही होगा।

रतन-यह काम जल्दी होना चाहिये। (चुप रहजाता है) (दरबान आता है और नमस्कार करके खड़ा रह जाता है)।

दरबान-एक परदेशी ब्राह्मण महाराज साहिब से मिलना चाहता है आज्ञा हो तो आने दिया जाय ?

रतन-आने दीजिये।

(प्रस्थान)

(पिरोहित जी आते हैं)

पिरोहित-महाराज की जय हो।

रतन-आइये, (उच्चासन देता है) आपका रहना कहां पर है ?

पिरो०—नराधीश मेरा रहना यहां से पश्चिम की तरफ रामपुर है।

रतन—वहां के राजा कौन हैं।

पिरो०—वहां पर प्रजा वत्सल राजा श्यामसिंह राज करते हैं।

रतन—कहिये यहां पधारने की कैसे तकलीफ उठाई, जो मेरे योग्य कार्य हो बतलाइये।

पिरो०—हां आपको थोड़ी सी तकलीफ दूंगा।

रतन—फर्माइये जो मेरे योग्य कार्य होगा जरूर ही करूंगा।

पिरो०—हमारे महाराज की राजपुत्री आप के शहजादे साहिब के योग्य हैं—(चुप रह जाता है)

रतन—हां हां कहिये चुप क्यों रह गये।

पिरो०—इसी राज कन्या के प्रश्न का उत्तर हर जगह गया लेकिन किसी ने नहीं दिया आपके कुँवर साहिब ने इसी प्रश्न का उत्तर कल शामको बागमें दे दिया है।

रतन—अच्छा सो फिर।

पिरो०—फिर यही कि रामपुरकी राजपुत्री की अपने सुपुत्र कमल-किशोर जी के साथ सगाई पक्की मंजूर की जावे उधर कन्या भी योग्य है। इधर वर भी बहुत गुणवान है।
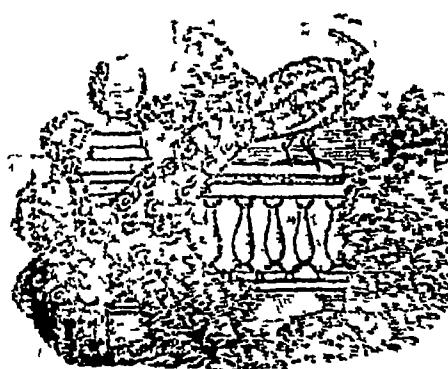
रतन—(मंत्री से) कहिये मंत्री साहिब इस मामले में आपकी क्या राय है।

मंत्री—जैसा पिरोहित जी ने फर्माया है उससे कन्या योग्य ही मालूम होती है। अतः मेरी समझ में यह सगाई कुंवर साहिब के साथ पक्की की जावे।

रतन—(पिरोहित जी से) अच्छा पिरोहित जी अपने महाराज से कहिये कि आपकी राज-पुत्री की सगाई हमको सहर्ष स्वीकार है और ठीक महूर्त दिखला के शीघ्र ही विवाह कर लेंगे।

पिरो०—बहुत ठीक अच्छा महाराज मुझे तो अब जाने की आज्ञा हो वहां भी राजा साहिब बाट देखते होंगे।

रतन—अगर ऐसा ही है तो बेशक पधारिये।

(पिरोहित जी जाते हैं और सभा बर्खास्त की जाती है)

(सबका प्रस्थान)

(पर्दा गिरता है)

दूसरा खण्ड।

पहला दृश्य।

स्थान—रामपुर के बाग में बरात का झण्डा।

समय—दोपहर।

[महफिल में राजा रतनसिंह एक सुन्दर आसन पर बैठे हैं सामने गलीचे पर मसनद के सहारे कमलकिशोर बरन रूप में और दायें हाथ को धनदेव मंत्री व बाये हाथ को राजकुमार बैठा है और सभी मुसाहिब अपने २ योग्य स्थानों पर बैठे हैं]

रतन—मंत्री साहिब यह शहर तो बहुत ही खूब सूरत है।

मंत्री—बेशक जो आप फर्माते हैं रत्ती २ सत्य है। मैंने भी ऐसा शहर आज तक नहीं देखा।

रतन—और यहा के महाराज साहिब भी तो बड़े शरीफ मालुम होते हैं।

मंत्री—जरूर इनके राज्य में प्रजा भी बड़े आनंद से रहती है।

रतन—सचमुच में राज्य का सु-प्रबन्ध है। इनकी राज-पुत्री भी बड़ी योग्य सुनते हैं।

मंत्री—उनकी तो क्या पूछते हैं संसार भर की स्त्रियों में उस की बराबर शायद ही कोई हो जब उनके पिता ऐसे हैं तो पुत्र पुत्री तो होंगे ही इसमें क्या संदेह है।

रतन—हमको तो बड़े अच्छे सज्जन मिले हैं।

मंत्री—बेशक ऐसे सम्बन्धी हर किसी को नहीं मिला करते, अच्छा सब लोग इस समय गाना सुनने के लिये उत्सुक हो रहे हैं अगर आज्ञा हो तो गाने वालीं बुलाई जांय।

रतन—हां जो लोगों की मर्जी है वही मेरी भी है शीघ्र ही गाने वालियों को बुलवाइए।

मंत्री—जो आज्ञा।

(प्रस्थान)

मंत्री—दरबान।

दरबान—जी हुजूर।

मंत्री—नाचने गाने वालियों को शीघ्र ही हाजिर करो।

दरबान—बहुत अच्छा।

(नाचने गाने वाली आती हैं)

सामने नाचने गाने वालीं बैठी है और पीछे हारमोनियम तबला सारंगी आदि बाजे बज रहे हैं हर एक क्रम २ से उठके नाचती गाती हैं।

(पहली गाती है)

(मुबारिक बादी)

चाल—वसूके लाल गिरधारी बहादुर हो तो ऐसा हो ॥

यह जलसा और यह महफिल मुबारिक हो मुबारिक हो।
कुंवर साहिब की ये शादी मुबारिक हो २ ॥
जरा कर गौर तो देखो खुशी दोनों तरफ छाई।
सभी को आज का दिन ये मुबारिक हो २ ॥
किसी इन्सान को देखो खुशी सबके दिलोंमें है।

सकल सज्जन का मिलना ये मुबारिक हो २ ॥
हरषके साथ सब कोई बड़े बन ठनके बैठे हैं ।
हमेशा जिन्दगी इनकी मुबारिक हो २ ॥
सदा दुखियोंका दुख टारें भलाई में रहें निशादिन ।
कुंवर साहिब का ये रुतवा मुबारिक हो २ ॥
बढ़े सौभाग्य दिन दूना यही है "वीर" की रटना।
ये जोड़ी दुल्हा दुल्हिन की मुबारिक हो २ ॥

(कमलकिशोर एक मुहर देता है)

(पहली बैठ जाती है)

(दूसरी गाती है)

॥ राग—कलिङ्गड़ा ॥

चाल—बनि आई भिखारिन तेरी ।
अब आई शरण में तेरी ॥ टेक ॥
तोसों प्रीतम नेह हमारो तब चरणन की चेरी ।
तोकूं छोड़ कहां में जाऊं बतला करो न देरी ॥
हम तुमको सारा जग जानत बँधे प्रेम की बेरी ।
जो मुख मोड़ो आशा तोड़ो करो हमारी ढेरी ॥
भूल गये क्या प्राण पियारे परी सात हैं फेरी ।
मेरे दिलसे जो तू पूछै तोसूं प्रीति घनेरी ॥
"वीर" सुनो न विलम्ब लगाओ पूजो आशा मेरी ॥१॥

(दूसरी बैठ जाती है)

पन्नालाल रामकुमार सब पर गुलाब जल छिड़कते हैं और इतर लगाते हैं तथा नौकर लोग सब पर पंखा ढोरते हैं ।

(तीसरी गाती है)

चाल—अरे रावण तू धमकी दिखाता किसे मुझे मरने का
खौफो खतर ही नहीं।

आओ २ गले में लगालूं सनम अपनी आंखों का तारा बनाऊं तुम्हें। जाओ हटके न पीछे हजारी वलम अपनी गर्दन की माला बनाऊं तुम्हें॥ भाग करके अगर जो चले जावगे क्या मिलेगा कहीं सुख बताओ पिया। ऐसी बातें न कीजै ये हट छोड़दो आओ अपने हृदयमें बिठाऊं तुम्हें॥ जो सताओगे मुझको समझ लीजिये इसका पाओगे अच्छा नतीजा नहीं। मो अभागिन का आके दरद मेंटिदो अपने कानों का भूषण बनाऊं तुम्हें। जो सताता किसी को है कोई कभी ना सदा उसकी होती है सुखसे गुजर। सैयां नादान पनको जरा छोड़दो लीजिये प्रेम प्याला पिलाऊं तुम्हें। देखो छाई घटा कैसी घन घोर है फिर भी कड़कें बिजलियां बड़े जोर से। इस समय पैर बाहर न दीजे कभी बैठो जैसा मैं गाना सुनाऊं तुम्हें॥ चाहे सीमा समुन्दर भले छोड़दे मेघ छोड़ें बरसना भले वक्तपर। दुख दिखाओ मुझे तुम किसी किस्म का "वीर" हर्गिज न छोडूं मैं दिलसे तुम्हें॥

(तीसरी बैठ जाती है)

(चौथी गाती है)

चाल—चल चुप रह ये बातें बनाओ मती।
मानो २ किसी को सताओ मती॥ टेक॥
देखके दुख जो किसी का भी खुशी होते हैं।
अपना मुख वे भी कभी आंसुओं से धोते हैं॥

और के वास्ते कांटे जो कोई बोते हैं।
और हँसते हैं सभी आप खड़े रोते हैं॥
अपनी ज्यादा घुड़किया बताओ मती।
मानो २ किसी को सताओ मती॥
सियाको लंकपतिने खूबही सताया था।
दुष्टके मन में देखो हाय यही भाया था॥
न माना नारिने भी बहुत ही समझाया था।
हरी के हाथ से तब शीघ्र ही फल पाया था॥
देखो हर्गिज किसी को दबाओ मती॥ मानो २॥
कंसने खूब ही अन्याय ठान रक्खा था।
सभीसे अपने को बढ़ करके मान रक्खा था।
कौन है मारने वाला ये जान रक्खा था।
कृष्ण ने मार इस भूपै आन रक्खा था।
किसी दुश्मन का दिलभी दुखाओ मती॥मानो २॥
अपने हितके लिये अन्याय कोई करता है।
पापकी बांधके वो गांठ शिर पै धरता है॥
लेके बदनामियां संसार से वो मरता है।
"वीर" हर्गिज न वो भव सिन्धु से निकरता है॥
ज्यादा दुखियों के दुख को बढ़ाओ मती॥मानो २॥

(चौथी बैठ जाती है)

रतन—अच्छा मंत्री साहिब अब चमेंनी बटवादो।
मंत्री—बहुत अच्छा, (लोग चमेंनी बांटते हैं)

(बरायत वाले लोग आते हैं)

बरायत वाले—अब सकल सरदार जीमने के लिये पधारें।

रतन—अच्छा हम लोग अभी आते हैं आप तशरीफ़ ले चले।

(प्रस्थान)

रतन—मंत्री साहिब सब लोगों से कह दीजिये कि शीघ्र ही तैय्यार हो जांय।

मंत्री—जो हुक्म (सब बराती तैयार हो जाते हैं और बरना पालकी में बैठार दिया जाता है। और नाचने गाने वाली आगे नाचती गाती हुई जाती है, और सब लोग जाके एक सुन्दर बड़े कमरे में बैठ जाते हैं)

(महल से एक आदमी आता है)

आदमी—हुज़ूर पहले बींद के साथ छोटे २ कुमारों को जीमने भेजिये।

रतन—अच्छा भेजते हैं। आप चलें।

(आदमी का प्रस्थान)

रतन—कमलकिशोर तुम पहले जीमने को सबके साथ जाओ।

कमल—जो आज्ञा।

(कुछ लड़कों को लेकर कमलकिशोर का प्रस्थान)

दूसरा खण्ड।

दूसरा दृश्य।

स्थान—रामपुर का राजमहल।

समय—तीसरा पहर।

(सब लड़के एक दालान में बैठ जाते हैं और बरना कमलकिशोर एक चन्दन के पटे के ऊपर मंडर के पास बैठता है)

भूदेवी—रामप्यारी वरको अच्छी तरह जिमाओ। कस्तूरी और लाडो वरना के पास जाके ढोलक आदि बाजे सहित मण्डप के एक तरफ बैठ जाओ।

सब—अच्छा जातीं हैं। (प्रस्थान)

भूदेवी—(केशव से) देखो कुंवर साहिब इन सबको अच्छी तरह मे जिमाना मैं वर को जिमाने जाती हूं।

केशव—अच्छा जाओ मैं सबको अच्छी तरह जिमा दूंगा।

(भूदेवी जाकर सब सखियों में बैठ जाती है)

रामप्यारी-भूदेवी मैं जब तक सब चीजें लाती हूं तुम एक गारी गावो।

भूदेवी—अच्छा जाओ मैं पहले गाती हूं।

(रामप्यारी जाती है और सब चीज लाकर रख देती है)

(भूदेवी गाती है)

चाल—मेला दिल्ली का भारी है, मिलकर जात सब नर नारि।

गारी गावो सखी हमारी वरना जीमे अति हर्षाय। टेक॥

सुवरण थार धरो लाकरके लोटा और गिलास।

गंगाजल सम पानी लावो जल्दी जल्दी जाय॥ १॥

पेड़ा परसौ बरफी परसै लाडू मोतीचूर।

गुलाबजामुन और इमरती परसौ सारी आय॥ २॥

खाजे परसौ फैनी परसौ परसौ पेठा ठीक।

चटनी परसौ भांति भांति की न्यारी २ लाय॥ ३॥

खुरमा परसौ पापड़ परसौ और सकल मिष्ठान।

"वीर" जिमावो धीरे २ गारी गाय बजाय॥ ४॥

[भूदेवी हरएक चीज परोसती है और कमलकिशोर इन्कार कर देते हैं]

रामप्यारी—अच्छा लाड़ो अब की तुम्हारा नम्बर है ।

(लाड़ो गाती है)

[चाल—बीमार हो रहा हूं औषध मुझे मंगादे ।]

सुन्दर किशोर प्यारे इतना तो काम कीजे ।
क्या पड़ रही है जल्दी इतनी उतावली है ॥
कुछ भी अभी न जीमा थोड़ासा और लीजे ।
कितनी ये सोंठ बढ़िया जिसमें पड़ी हैं दाखें ॥
परसन सखी खड़ी है इस परभी ध्यान दीजे ।
अच्छी तरह से जीमो चितमें करो न चिन्ता ॥
उसको उतावली हो जो कोई मेह भीजे ।
औरत नहीं तो फिर क्यों ये लाज कर रहे हो॥
झारी का नीर ठंडा ले करके " वीर " पीजे ॥

भूदेवी—रामप्यारी अब तुम गावो ।

(राम प्यारी गाती है)

[चाल—वसूके लाल गिरधारी बहादुर होतो ऐसा हो ।]

है शिरपै म्हौर क्या अद्भुत बनावट क्या निराली है ।
तुम्हारी मोहनी मूरत मनों साचे में ढाली है ॥
स्वदेशी वस्त्र का जामा छटा अपनी दिखाता है ।
विदेशी वस्तु अति निन्दित सभी इक दमसे टाली है ॥
तुम्हारे हाथ का कंकन बड़ी शोभा बढ़ाता है ।
तुम्हारी कीर्ति की जग में बजे चौतर्फ ताली है ॥
झँगा ये आपका निर्मित स्वदेशी ठीक खद्दर का ।
आपका अंग कोई भी न इस से एक खाली है ॥
आप जैसे अगर जन्में देश की फिर तरक्की हो ।
" वीर " शाबास है तुमको प्रतिज्ञा खूब पाली है ॥

(कमलकिशोर पानी पीकर उठ बैठता है और सब छबी पकड़ कर पास में पड़े एक गलीचे पर बैठ जाता है)

लाड़ो—कस्तूरी एक प्यारी तुम गावो जो बहुत अच्छी हो जिससे बींद की तबियत खुश हो जाय और जाने दो २ इस नाम को छोड़दें ।

कस्तूरी—अच्छा ऐसी ही गाती हूँ ।

(गाती है)

[चाल—तुम्हारे मुंह पर है दाग चेचक हमारे दिल में है दाग हसरत ।]

बताओ जल्दी पड़ी कहा की जो इतनी जल्दी हो जा रहे तुम ।
हमारे ढिग आ के बैठने में शरम मुसीबत क्या पा रहे तुम ॥
क्यों इतनी जल्दी मचाओ साहिब जवाब दीजे न लाज कीजे ।
हमारी टुक भी न कान धरते अपनी २ ही गा रहे तुम ॥
निज देश की भी दो एक बात हमको प्यारे सुनाय दीजे ।
क्या कोई नाहर बैठा यहां है जिसका मनमें भय खा रहे तुम ॥
ये पान खाओ सदा सुगन्धित पड़ी है जिसमें महान चीजें ।
क्यों "वीर" हमको समझके भोली अनेक बहाना बना रहे तुम ॥

(भूदेवी पान देती है)

कमल—अच्छा जाने दीजिये बहुत देर होगई ।

भूदेवी—१० मिनट और बैठिये फिर शौक से जाइये ।

(बींद से सब हंसी मजाक करती हैं)

भूदेवी—आपकी बहन है ?

रामप्यारी—इनका नाम तो पूछो ।

लाड़ो—रंग में गोरी है या कारी ?

कस्तूरी—कारी क्यों होगी ।

भूदेवी—तबतो जोड़ी ठीक मिल गई, कुंवर केशव भी अभी क्वारे है।

(एक आदमी का प्रवेश)

आदमी—अब ज्यादा देर होगई है कुंवर साहिब को जाने दो अभी जीमने को सभी रहे हैं ज्यादा दिन नहीं है।

सब—अच्छा पधारिये कुंवर साहिब।

(लड़कों के साथ कमलकिशोर का प्रस्थान)

(श्यामसिंह का प्रवेश)

श्याम—अरे कोई आदमी है सब सरदारो को लिवा लाओ, देरी न करो।

(आदमी जाता है और वापिस सबको लेकर आता है, राजा रतनसिंह एक चौकी पर बैठ जाते हैं और फ़र्श पर सब आदमी बैठते हैं)

श्याम—केशव सरदारों की अच्छी तरह से खातिर करो।

केशव—जो आज्ञा। सब [आदमी परोसने लगते हैं और बरायत वाले जीमते हैं।]

(भीतर से स्त्रियां गारी गाती है)

चाल—महिमा है अपरम्पार तेरी जगदीश हरे।

मिल गावौ सखी सुजान सजन सब जीम रहे।
बड़े हमारे भाग समझना सजन मिले है आन सु महिमा कौन कहे॥
किये पवित्र महल ये आकर पाके दर्श तुम्हार सकल आनंद लहे।
कृपा करी है बड़ी आपने आये सदन हमार बड़े तुम कष्ट सहे॥
भूल न जाना हमे कभी तुम हो तुम सब मतिमान प्रजा सब यही चहे
'वीर' यही है इच्छा सब की दोनों तरफ सदैव प्रेम का नीर बहे॥

(सब आदमी जीम के उठते है और बरायत के लोग सबको पान इलायची देते हैं तथा श्यामसिंह राजा रतनसिंह से मिलते है)

श्याम—आपके चरणों की सेवा करने के लिये अपनी पुत्री को आपके शहजादे साहिब को समर्पण करता हूं इसे स्वीकार कीजिये मेरे पास इससे ज्यादा कोई चीज नहीं जो देकर आपको प्रसन्न कर सकूं मैं किस लायक हूं मुझे अपना तावेदार समझें और अपने दिल से कभी न भूलें यही प्रार्थना है।

रतन-आप जैसे सज्जन लाखों में क्या बल्कि करोड़ों में भी मिलने दुर्लभ हैं। हमारे बडे भाग्य हैं जो आपके यहां से हमारा सम्बन्ध हुआ है।

आपने अमूल्य रत्न देकर हमारे घर को शोभायमान कर दिया है तथा आपने हमारे वंशरूपी पौधे को जल सींचकर बढ़ाया है। इससे हम आपके बड़े अहसान मन्द हैं आपका बदला कभी नहीं दे सकते आप हमें अपना ही समझें और हमेशा कृपा दृष्टि रक्खें अब कई दिन बीत चुके हैं इसलिये कल सुबह ही बिदा करदें तो बहुत अच्छा हो क्योंकि राज्य के प्रबन्ध की थोड़े दिन के लिये भी राजा खुद देख रेख न रक्खे तो कार्य बिगड़ जाता है। तथा बडे २ राज्य के कर्मचारी भी यहीं पर हैं। अतः संभव है कि किसी तरह का पीछे कोई गैर इन्तजाम हो जाय और प्रजा दुःख पावे। आशा है कि आप इस हमारे निवेदन पर ध्यान देंगे। आपही खुद समझदार हैं अधिक क्या कह सकता हूं।

श्याम—अगर ऐसा ही है तो मेरे कुछ उजर नहीं मुझे तो उसी मे आनन्द है जिसमें आप प्रसन्न रहें ।

(सब बरात वाले अपने २ स्थान पर जाते है)

दूसरा खण्ड ।

तीसरा दृश्य ।

स्थान—मानपुर का दरबार ।

समय—प्रभात ।

(राजा मानसिंह बैठे हुए मंत्री से बात चीत कर रहे हैं)

मान०—मंत्री जी देखा दुर्गापुर के राजा दुर्गासिंह का अब कैसा मिजाज होगया है। अब तो वह आसमान से बातें करता है । पहले क्या सीधा साधा था ।

मंत्री—बेशक उसके दिल में कुछ स्वतंत्रता आगई मालुम होती है ।

मान०—देखो मैंने पहले भी कई दफे आपसे इसके बारे में कहा था वही हुआ न, तो अबकी दफे उसे जरूर ही कोई अच्छी सजा दूंगा जो जन्म तक उसे मालूम रहे कि ज्यादा इतराने का यह फल मिलता है ।

मंत्री—कैसी सजा देंगे ।

मान०- ऐसी सजा दूंगा जो आज तक किसी ने न दी हो ।

मंत्री—क्या लड़ाई करेंगे ?

मान०—हां और तरह न माना तो इसी नीति का प्रयोग करना पड़ेगा ।

मंत्री—मालूम है उसकी तरफ मदद देने वाले कितने ही राजा लोग हैं । न आपके पास उतना बल है न दल ही तब किस तरह लड़ेंगे ।

मान०—अगर उसकी तरफ सारी दुनियां होजांय तो मेरा क्या कर सक्ती है । मैं अकेला ही उन सबको बहुत हूं मेरे आगे विचारे किस खेत की मूली हैं मैं जाते ही जाते सबको वश में कर लूंगा दुनिया में किसकी मजाल है जो मेरी बराबरी कर सके दुर्गासिंह तो चीज ही क्या है ।

मंत्री—राजा साहिब विचार कर के काम करना चाहिये जिस से पीछे पछताना न पड़े जो बिना विचारे शक्ति से बाहर काम कर बैठते हैं वे पीछे बहुत ही पछताते हैं और हँसी के पात्र होते हैं । हमेशा मित्रता व बैर बराबर वाले ही से शोभा देता है अधिक मान करना ठीक नहीं, जब लंकपती राजा रावण का भी मान न रहा तो उस के आगे आपकी कितनी शक्ति है बुद्धि-मान वही है जो हमेशा सोच विचार के काम करे देख लीजिये इसका अन्तिम परिणाम क्या होगा ।

मान०—बस २, मैं ज्यादा नहीं सुनना चाहता जो मुझे सूझी है वही करूंगा । आप दूतको बुलाइये ।

मंत्री—इसका नतीजा अच्छा नहीं होगा ।

मान०—आपको इस से क्या मतलब, मैं जो कहता हूं वह काम कीजिये।

मंत्री—बहुत अच्छा। (प्रस्थान)

(दूत आता है)

दूत—महाराज की जय हो।

मान०—आइये तसरीफ रखिये।

(बैठ जाता है)

दूत—फर्माइये आज बन्दे को कैसे याद किया।

मान०—हां आज आप से कोई विशेष कार्य था।

दूत—ताबेदार हाजिर है जो आज्ञा हो फर्माइये आपके काम को दिलोजान से करूंगा।

मान०—बेशक आप काबिल तारीफ हैं। आपको मालुम है कि दुर्गापुर का राजा कितने गर्म मिजाज का होगया है जो अब हमारे आधीन रहना पसन्द ही नहीं करता।

दूत—हां ऐसा ही सुना है कि वे अब आपके आधीन नहीं रहना चाहते।

मान—ठीक है। तो अबकी दफै उसे मजा चखाऊंगा। देखो तुम शीघ्र ही दुर्गापुर जाओ और उसे भली भांति समझाओ, या तो मेरी आधीनता स्वीकार करे, या किले को छोड़ दे। अगर दोनों बातें मंजूर न हों तो लड़ाई के लिये तैयार हो जाय। चौथा उपाय कोई नहीं है। आपको अधिक क्या समझाऊं खुद चतुर

हो। देर करने का समय नहीं है। इस कार्य में जल्दी ही करनी चाहिये।

दूत—जो आज्ञा महाराज की।

(दूत का प्रस्थान)

(मानसिंह भी महल को जाते हैं)

दूसरा खण्ड।

चौथा दृश्य।

स्थान—दुर्गापुर का दरबार।

समय—दो पहर।

[राजा दुर्गासिंह सिंहासन पर बैठे हुए हैं और पास ही एक एक कुर्सी पर मंत्री बैठे हैं]

दुर्गा—हमारी स्वतंत्रता को राजा मानसिंह न देख सके। सुना है कि वे अब हमारे विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे हैं।

मंत्री—हां! मैंने भी ऐसा ही सुना है, अब क्या करना होगा।

दुर्गा—जो आगे होगा वह देखा जायगा अभी से क्या चिंता है।

मंत्री—नहीं, ऐसे कामों की पहले से ही तरकीब सोचनी चाहिये। आग लगने पर कुवा खोदने से काम नहीं चलता (दरबान आता है)

दरवान—एक दूत बाहर खड़ा है अगर आज्ञा हो तो आने दिया जाय?

दुर्गा—आने दो कौन है? (प्रस्थान)

(नम्र भाव से दूत का प्रवेश)

दूत—महाराज की जय हो।

दुर्गा—कहिये कहां से आना हुआ?

दूत—मानपुर से आ रहा हूं।

दुर्गा—किसलिये तकलीफ उठाई?

दूत—महाराजा मानसिंहजी ने मुझे आपके पास भेजा है।

दुर्गा—कहिये उनका क्या इरादा है?

दूत—उन्हों ने यही फर्माया है कि या तो आप आधीनता स्वीकार करें या किले को खाली करदें और राज्य से बाहर मय कुटुम्ब के चले जांय। अगर दोनों बातों को नामंजूर करें तो लड़ाई के लिये तैयार होलें। कहिये क्या जवाब है?

दुर्गा—दूत! तुम अपने राजा से कह दो कि हम लड़ाई के लिये तैयार हैं।

दूत—बहुत अच्छा। मेरा जो काम था वह मैं कर चुका अब मेरी तरफ से कुछ भी हो। (दूत का प्रस्थान)

दुर्गा—देखा मन्त्रीजी अभी जो बात कर रहे थे वही सामने आगई न? कहिये आपकी इसमें क्या सलाह है?

मन्त्री—जो आपकी सलाह है वही मेरी भी समझिये। लेकिन यह नीति का वाक्य है कि अगर चींटी से भी लड़ने

जाय तो हाथी का मुकाबला करें। क्योंकि निर्बल शत्रु भी मौका पाकर बड़े से बड़े का चक्कर खिला देता है।

दुर्गा—यह ठीक है। मैं भी प्रतिज्ञा करके कहता हूं कि कभी पराधीनता स्वीकार अब न करूंगा। चाहे प्राण बेशक चले जांय। जब तक दम में दम है तब तक कभी भी अपनी प्यारी मातृ भूमि को परतंत्रता के पिंजड़े में न डालूंगा। मेरी तमाम सेना से कहदो कि जिन को अपनी प्यारी जन्म भूमि से प्रेम है। वह मरने मारने के लिये तैयार हो जाय। और जिन को संसार के क्षणिक सुख अच्छे लगते हैं और बिना कुछ किये खाट पर पड़े २ मरना चाहते हैं। वे कभी इस काम के लिये हिम्मत न करें।

मंत्री—आपकी सारी सेना व रैयत आपके लिये प्राण देने को तैयार है। लेकिन एक बात सुनिये रायपुर के महाराजा रतनसिंह जी आपके पुराने मित्र हैं। अगर वे सहायता के लिये आ जांय तो दुश्मन कुछ भी नहीं कर सक्ता। मेरी समझ में तो एक चतुर दूत को पत्री देकर उनकी शरण में भेजना चाहिये। वे जरूर ही मदद देंगे पूरी उम्मेद है।

दुर्गा—अगर आपकी यही मर्जी है तो जरूर ही एक पत्र राजा रतनसिंह जी की सेवा में दूत द्वारा भेजना चाहिये। अभी चिट्ठी लिख कर किसी होशयार दूतको रवाना कीजिये।

मंत्री—जो आज्ञा।

(मंत्री पत्र लिखता है)

अब आप अपने हस्ताक्षर कर दीजिये ।

(राजा पत्र पढ़कर हस्ताक्षर करता है)

दुर्गा—मंत्री जी दूत को बुलाइये ।

मंत्री—बहुत अच्छा ।

(प्रस्थान)

(दूतका प्रवेश)

दूत—महाराज की जयहो कहिये क्या आज्ञा है ?

दुर्गा—इस पत्री को फौरन ही राजपुर रतनसिंह जीकी सेवा में ले जाओ ।

दूत—जो आज्ञा ।

(दूत का प्रस्थान)

(दुर्गासिंह महल को जाते हैं)

॥ दूसरा खण्ड ॥

॥ पांचवां दृश्य ॥

स्थान—राजपुर का राजदरबार ।

समय—तीसरा पहर

[रतनसिंह सिंहासन पर बैठे हैं और पास में ही मंत्री तथा सामने कमलकिशोर बैठा है ।

रतन—मंत्री साहिब ! उस दिन के श्यामसिंह जी के उन वचनों को बड़ी याद आती है। उनके वचन में कैसी नम्रता और कैसा अद्भुत प्रेम झलकता था। सच है मीठी वाणी से शत्रु भी मित्र हो जाते हैं। प्रेम में बड़ी ही तासीर है। कहिये ठीक है न ?

मंत्री—दरअसल में यही बात है। उनका तमाम वन्श ही प्रेम के रंग में रँगा हुआ है। देखो न उनकी शहजादी साहिबा ने भी कैसा प्रश्न किया था। पर कहीं भी उस प्रश्नको कोई भी हल न कर सका। अन्त में वही प्रश्न कुंवर कमलकिशोरजी ने बात की बात में हल कर दिया। ठीक है जिस कामका जो जानकार होता है उसको वैसे कामों में कुछ भी कठिनता मालुम नहीं पड़ती उसमें हमारे शहजादे कमलकिशोर जी भी एक हैं। इन के गुणों व चारित्र का वर्णन करना हमारी सामर्थ्य से बाहर है। कुंवर साहिब भविष्य में कोई होनहार पुरुष मालुम होते हैं।

रतन—कमलकिशोर ही को क्या अपने सुपुत्र राजकुमार को ही न देखो और उनके मित्रों को जिन्होंने जरासी देर में ही तमाम विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर दिया और आजन्म स्वदेशी ही वस्तु के व्यवहार करने की प्रतिज्ञा करली। देखो उनको अपनी मातृभूमि से कितना प्रेम है। मंत्री—इससे क्या उन सब के गुरू तो कमलकिशोर ही हैं।

रतन—जो कुछ हो प्रेम की महिमा अपार है। गाने वालियो गाओ।

(गाने वाली गाती हैं)

[चाल—जो सुखकी इच्छा होय भजो भगवत को आठौयाम।]

सब गाओ चतुर सुजान प्रेम की महिमा अपरम्पार ॥टेक॥

क्या ऊंचा क्या नीच प्रेम में क्या निर्धन धनवान।
छोटा मोटा क्या है इसमें क्या मूरख विद्वान॥
द्वेश भाव को छोड़ सदा जो करते इसका पान।
प्रेम मयी दुनियां मे वे ही पाते हैं सन्मान॥
जो धारे इसको हृदे जगते से होते वो ही पार।
सब गाओ चतुर सुजान प्रेम की महिमा अपरम्पार॥१॥

निर्बल को ये बल है भारी भूखे को पकवान।
अधिक तृषातुर को है येही जलका कुण्ड महान॥
दुखिया दीन दरिद्री को ये रत्नों की है खान।
बिना शस्त्र वाले को सबसे बढ़कर खड्ग प्रधान॥
अपनाओ प्यारे बन्धु इसे ये सारे जगमे सार॥२॥

लंगड़े को है ये बैशाखी बहरे को दो कान।
बिन नांक वाले की जगमे नांक इसी का मान॥
अन्धे को युगलोचन प्यारा बस येही है जान।
बिना पुत्र वाले का जानो इसे पुत्र का धान॥
जो दावा तेरा मनुजपने का घटमें इसको धार॥३॥

बिना कण्ठ वाले को सबसे यही सुरीलीतानें।
जिसको नहीं ठिकाना उसको ये ही उत्तम थान॥
अन्धकार में पड़े हुओं को यही चमकता भान।
दानी हो गर सच्चे सबको देउ प्रेम का दान॥
मत छोड़ो कभी "सुरेन्द्र" बनाओ इसे गले का हार॥४॥

(सब बैठ जाते हैं)

(दरबान का प्रवेश)

दरबान—महाराज बाहर एक दूत खड़ा है और आपसे मिलना चाहता है। आज्ञा होतो आने दिया जाय !

रतन—हां आने दो।

(प्रस्थान)

(दूत का प्रवेश)

दूत—महाराज की जय हो।

रतन—कहिये कहां से आना हुआ ?

दूत—मुझे दुर्गापुर से राजा दुर्गासिंह जी ने आपकी सेवा में भेजा है।

रतन—कहिये मेरे लायक क्या काम है ?

(दूत पत्री निकाल कर देता है)

रतन—मंत्री साहिब इसे पढ़िये क्या लिखा है।

मंत्री—बहुत अच्छा।

(मंत्री पत्रको पढ़कर सुनाता है)

श्रीमान राजाधिराज श्री रतनसिंहजी को योग्य लिखी दुर्गापुर से दुर्गासिंह की जयश्रीजी की बंचना। अपरंच नम्र निवेदन यह है कि मानपुर के राजा मानसिंहजी हमसे अकारण वैर करके लड़ाई करने को आमादा हुये हैं। अतः इस समय आपकी सहायता का इच्छुक हुआ हूं। क्षत्री का धर्म ही शरणागत की रक्षा

करना है। और आपकी पहले से ही हमारे ऊपर कृपा दृष्टि है। आशा है कि ऐसे मौके पर आप जरूर ही सहायता करेंगे। अस्तु। इस पत्रका जवाब जैसा हो वैसा पत्र के देखते ही देना। बुद्धिमानों को विशेष क्या लिखूं।

आपका—कृपा भिलाषीः—

राजा दुर्गासिंह—दुर्गापुर।

रतन—दूत तुम अपने महाराज से कहदो कि हम आपकी मदद के लिये शीघ्रही आते हैं आप दिलमें निश्चय रक्खे।

दूत—जो आज्ञा।

(दूतका प्रस्थान)

रतन—मंत्रीजी आपकी क्या सलाह है।

मंत्री—आपने जो दूसरे को विश्वास दिया है तो जाना जरूर ही चाहिये।

रतन—हालांकि मेरी अब लड़ने की उमर नहीं है तो भी जरूर ही जाऊंगा। क्योंकि वचन दे चुका हूं। मंत्री जी तमाम फौज को तैयार होने का हुक्म सेनापति को बुलाकर सुनादो। और आप पीछे तमाम राज्यकी देखभाल अच्छी तरह रखना। अगर जिन्दा रहा तो फिर मिलूंगा वरना सबसे यही अखीर का मिलना है। (पिताको उठता देखते ही कमलकिशोर उठवैठता है)

कमल—पिताजी आप सहायता के लिये नहीं जावेंगे।

रतन—फिर और कौन जायगा ?

कमल—मैं जाऊंगा।

रतन—यह क्या कहते हो अभी तुम्हारी उम्र लडने की नहीं है तुम जाने का नाम न लो।

कमल—पिता जी मै जरूर ही जाऊंगा।

रतन—मान जा बेटा !

कमल—नहीं पिता जी मैं तो जाऊंगा ही।

रतन—जिद मत पकडे बेटा !

(राजा गाता है)

चाल—वसू के लाल गिरधारी बहादुर हो तो ऐसा हो।
मदद के हेत अय बेटा कभी हर्गिज न जाओ तुम।
अगर कहना न मानोगे बड़ी तकलीफ पाओ तुम ॥ टेक ॥
लड़ाई कर सके जाके अभी क्या है उमर तेरी।
मानजा प्राण प्यारे चित्त नादानी न लाओ तुम ॥
तुझे मरते ही छोना वंश का सब अन्त हो जावे।
पिरोना लाल सुत मेरे न रण के गीत गाओ तुम ॥
मुझे तेरा सहारा है तुही है आंख अन्धे की।
जरा मेरे वचन पर भी कुंवर जी ध्यान लाओ तुम ॥
छोड़ दे हट सुकुल दीपक कही तू मान जा मेरी।
"वीर" जिद् को पकड़ करके न रण संग्राम धाओ तुम ॥
बेटा लड़ाई में जाने से तुम्हारी जानका खतरा है। इस जिद को छोड़ दे प्राण प्यारे।

कमल—पिताजी कुछ भी हो मैं तो जरूर ही जाऊंगा।

(गाता है)

चाल—वसू के लाल गिरधारी बहादुर हो तो ऐसा हो।
पिता जी मत करो पर्वा मैं रण करने को जाऊंगा।
समर संग्राम मे जाकर अजब कौतिक दिखाऊंगा॥ टेक॥
हुए है पुत्र जब समरथ पिता को क्या पड़ी पर्वा।
अगर जो आप का सुत हूं विजय करवा के आऊंगा॥
मदद अपनी जो ले कोई बचावे हर तरह उसको।
नहीं है जानकी चिन्ता मगर उसको बचाऊंगा॥
पड़ेगा अन्त को मरना न लेकिन यों मरूंगा मैं।
मरूं जो दूसरे के हित जहां में नाम पाऊंगा॥
बचावे शरण आये को यही है काम क्षत्री का।
जाय रणभूमि में अरितो ने क्षत्रापन दिखाऊंगा।
वैरियो के समर अन्दर करूंगा दांत मैं खट्टे॥
"वीर" होकर कभी कायरपनो दिल में न लाऊंगा।
पिता जी आप किसी तरह की फिकर न करें। मैं विजय करवाके ही लौटूंगा।

रतन—युद्ध कोई खिलौना नहीं है। जो झट से फोड़ डालोगे अभी तो तू बिलकुल नादान है। तलवार पकड़ने में ही तेरा हाथ कांपने लगता है। लड़ाई में जाते ही बड़े बड़ों के छक्के छूट जाते है तो तू क्या चीज है।

कमल—पिता जी आपने ठीक कहा लेकिन छोटा सा सिंह का बच्चा मदोन्मत्त हाथी को बात की बात में वश में नहीं करता क्या? राम लक्ष्मण जी क्या छोटे नहीं थे जिन्होंने पर्वत समान लंकापति राजा रावण को यमराज

के द्वार पहुँचा दिया। क्या कृष्ण जी छोटे नहीं थे। जो महा अत्याचारी प्रबल शत्रु कंस को भी क्षणभर मे पछार दिया। मैं भी क्षत्री का पुत्र हूं। मुझे किसका डर है। मैं शरण गहे की जरूर ही रक्षा करूंगा।

रतन—इन बातों का छोड़दे बेटा! शत्रु के सामने जाना लोहे के चना चबाने से कहीं बढ़कर है।

(राजा फिर गाता है)

चाल-पीले २ लालरे मैं पिला रही हूं।

तू तो है नादान रे क्या रण की खबर है॥
रण क्या है नादान का सुभटो का समर है॥
थर थर कांपै गात सब रण बड़ा जबर है॥
बड़े बड़ों ने युद्ध में छोड़ा जा सबर है॥
निर्बल पुरुषों के लिये रण भूमी जहर है॥
"वीर" समझता युद्ध को क्या नानी का घर है॥

बेटा युद्ध करना शूरमा को ही शोभा देता है। तो जैसे नादानों के लिये यह काम नहीं है।

कमल—पिताजी मैं भी शूरमा से कम नहीं हू। वह पुत्र ही किस काम का जिसके समर्थ होते भी पिता तकलीफ पावै। और खुद आनन्द भोगे। मैं युद्ध में शत्रु को जरूर ही पराजित करूंगा॥

(गाता है)

चाल—पीले २ लालरे मैं पिला रही हूं।

मैं हूं बेटा सिंह का क्या मुझको फिकर है।
जाने को संग्राम में मोह काहे का डर है॥

रणभूमी तो शूर को ही नानी का घर है।
क्या कर सकता सो सामने कोई भी ठहर है॥
हाथी रूपी बैरियों को केहरि जबर है।
कायर या डरपोक को रण बेशक जहर है।
रणभूमी के खेल की साइ अच्छी खबर है॥
"वीर" दिलेरों के लिये बस वो ही नगर है॥

पिताजी आप किसी तरह का संदेह न करें। मैं आपके चरणों की कृपा से जरूर ही विजय लाभ करूंगा।

(नेपथ्य से शाबास है कमलकिशोर आवाज आती है)

रतन—अच्छा बेटा नहीं मानता तो जा लेकिन शत्रुओं से होश्यार रहना। मरजाना परन्तु शत्रु को कभी पीठ मत दिखाना।

कमल—जो आज्ञा। (चरण छूता है)

रतन—बेटा भगवान तुम्हारी विजय करे।

कमल—प्रणाम पिताजी।

रतन—चिरंजीव रहो।

(सब का प्रस्थान)

(पर्दा गिरता है)

तीसरा खण्ड ।

पहला दृश्य ।

स्थान—रामपुरमें कोतवाल का मकान ।

समय—प्रभातकाल ।

(कोतवाल दुर्जनसिंह अपने सोने के कमरे में उदास भाव से बैठे हैं । और ठण्डी स्वासे ले रहे हैं)

दुर्जन—अहा ! उसका पूनम के चन्द्रमा के समान सुन्दर गोल चहरा तोते के समान नुकीली नाक, हिरणी की सी आंखें मोती के समान चमकते हुये दांत क्या ही शोभा दिखाते थे । उसकी तिरछी चितवन हंस की सी चाल कैसी भली मालूम होती थी । भला ऐसी खूबसूरत चीज पर किसका मन न चलेगा । मुझे तो उस दिन उसका रती को भी लजाने वाला सुन्दर मुख देखते ही एक दम गश आगया होता । पर मैंने अपने को बड़ी मुश्किल से उस वक्त संभाला था । अगर इस हार को गले में न पहना तो यह मेरा जीवन व्यर्था है । एक दफे तो जरूर ही पहनकर दिल की उम्मेद पूरी करूंगा । पीछे कुछ भी हो । (कुछ सोचकर) हां लेकिन ऐसा होगा किस तरह वह तो शहजादे कमलकिशोर की पतिव्रता स्त्री है । और पर पुरुष को अपने भाई के बराबर मानती है । मेरा कार्य शायद ही सिद्ध हो ।

(चुप रह जाता है)

(उछल के) ओहो क्या ही अच्छी तरकीब सूझी है। किशोरी की जो प्रधान टहलनी तारा है। उसको बुलाऊं किशोरी उसकी जरूर बात मानती होगी। उसी को लोभ देकर यह काम करवाना चाहिये। ओ पहरेदार यहां आओ।

(पहरेदार का प्रवेश)

पहरेदार—कहिये सरकार क्या हुक्म है।

दुर्जन—अरे ! तारा का घर जानते हो न ?

पहरेदार—कौन तारा।

दुर्जन—कौन क्या वही किशोरी की प्रधान टहलनी।

पहरेदार—हां उसको तो जानता हूं उसका घर तो नई गली में है न ?

दुर्जन—हां वही तारा देखो उससे कहना कि कोतवाल साहिब को इसी समय तुमसे कोई जरूरी काम है शीघ्र ही चलो।

पहरेदार—जो आज्ञा। (प्रस्थान)

(थोड़ी देर बाद कुछ २ हंसते हुए तारा का प्रवेश)

तारा—फर्माइये हुजूर मेरे लायक क्या काम है।

दुर्जन—आइये तसरीफ रखिये (बैठ जाती है) एक जरूरी काम के लिये आपको इतनी तकलीफ दी है, माफ करें।

तारा—वाह ! इसमें तकलीफ की कौनसी बात है। कहिये ऐसा क्या सख्त काम है जो आप इतनी चिन्ता कर रहे हैं।

दुर्जन—वह काम आपके ही लायक है। कहूंगा।

तारा—आप निस्संकोच होकर कहिये—क्या मामला है ?

दुर्जन—देखो इस बात को किसी से कहना मत ।

तारा—कहीं ऐसा भी हो सकता है जो आपकी बात दूसरे से कह दूं ।

दुर्जन—सो तो हमको आपका पूरा विश्वास है । सुना है कि किशोरी आपके कहे में चलती है ।

तारा—नहीं । पर उससे क्या काम है वह बतलाइये ।

दुर्जन—एक दफे उससे. ..बस इसी से समझलो ।

तारा—इस बात का कभी भूल करके भी नाम न लेना । वह पर पुरुष की तरफ आंख उठाकर भी नहीं देखती ।

दुर्जन—सब कुछ होने पर भी उनकी डोर आपके हाथ में है । जिधर चाहो उधर फेर सक्ती हो । अगर मेरा काम बना दिया तो आपको अच्छी तरह से खुश कर दूंगा । आपके लिये यह कितना काम है ।

तारा—(कुछ सोच के) हां जहां तक मेरा वश चलेगा वहां तक आपका काम जरूर ही पक्का कर दूगी । अगर मौका लगा तो आज ही किसी वक्त जाऊंगी । जिस तरह होगा आपके काम बनाने में कसर न उठा रक्खूंगी ।

दुर्जन—यह काम आपके ही ऊपर है । भूलना मत ।

तारा—आप यकीन रखिये मैं आपके इस कार्य में दिलोजान से कोशिश करूगी, अच्छा अब जाने की आज्ञा दो ।

दुर्जन—हां खुशी से जाइये, देखो याद रखना ।

(तारा का प्रस्थान)

॥ तीसरा खण्ड ॥

॥ दूसरा दृश्य ॥

स्थान—राजपुर के राजमहल में किशोरी का शयनागार।

समय—सायंकाल।

[किशोरी उदासभाव से अकेली बैठी है]

किशोरी—प्राणनाथ ! आप अभी तक नहीं लौटे, और न इस दासी को कोई राजी खुशी के समाचार ही भेजे, न मालुम क्या कारण हुआ। जीवन आधार ! आप के बिना एक रात एक वर्ष के बराबर कटती है, प्रीतम ! आपके बिना न खाना अच्छा लगता है न पहरना। स्वामिन् इस दासी को शीघ्र ही दर्शन दीजिये, और इस दाह युक्त हृदय को शीतल कीजिये।

(गाने लगती है)

चाल—कैसे कटेंगी रतियां।

कैसे न दीनीं पतियां। आहां सैंया। टेक ॥

चित से न उतरें प्राण पियारे, हरदम वे तेरी बतियां ॥ १ ॥
मैं ना जानी मेरे संग भी आप करेंगे घतियां ॥ २ ॥
जल्दी आओ बलम हमारे कीजै आ ठण्डी छतियां ॥ ३ ॥
विरह तुम्हारे में होती हैं प्रीतम मेरी ये गतियां ॥ ४ ॥
बिना आपके "वीर" न कटतीं मेरी ये पापिन रतियां ॥ ५ ॥

आज मुझे अच्छा क्यों नहीं लगता क्या बात है ? यह मेरी दाहिनी आंख आज क्यों फड़कती है। भगवान् ! आज क्या होना है।

(तारा का प्रवेश)

तारा—कहिये आपके कुशल तो है।

किशोरी—जगदीश्वर की कृपा से अभी तक तो कुशल है। लेकिन तारा आज तू कहां गई थी। जो सारे दिन नहीं आई। आकर अब सूरत दिखाई है।

तारा—आज देर से आने का कारण यह है कि आज सुबह से ही मेरी तबियत खराब थी। इस समय कुछ ठीक है।

किशोरी—यह बात थी तो खैर।

तारा—रानी साहिब आपको बिना शहजादे साहिब के कैसे कल पड़ती होगी।

किशोरी—क्या करूं दिनतो आपके साथ बात चीत करने से कट जाता है, और रातको तारे गिन २ के निकाल देती हूं।

तारा—हमको तो इस तरह से कल नहीं पड़ती हमतो स्वाधीन हैं। जिसको अच्छा देखती हैं। उसी पर झट हाथ मार देती हैं देखो मैंने आज ही एक शौकीन आदमी देखा है। उसकी बराबर खूब सूरत मैंने तो कोई अपनी आंखों से आज तक देखा नहीं। हजारों ही उसको अपने गले में पहनना चाहती हैं। लेकिन वह किसी के हाथ नहीं आता अगर आप चाहें तो किसी तरह से मिला सक्ती हूं जो ऐसी ही चीज को न भोगा तो जीवन व्यर्थ ही है।

(चुप रह जाती है)

किशोरी—धिक्कार है ! तो सरीखी औरतों को जो क्षणिक सुख के लिये अपने वृत शील संजम को त्याग देती है। आज से मेरे सामने कभी ऐसी बात न करना। ऐसी औरतों को अपने पास बैठालने में भी पाप लगता है। हमारे महल में भी तू कभी मत आना मैं ऐसी पापिनी का मुंह भी नहीं देखना चाहती। अगर तू अपना भला चाहती है तो यहां से जल्दी चली जा।

तारा—है ! रानी साहिब मैंने इसमें कौनसी खराब बात कही है, जो आप नाराज हो गई।

किशोरी—बस चली जा यहां से।

(ढक्का मारके निकाल देती है)

तारा—(मन में) अच्छा किशोरी तैंने जो मेरा आज अपमान किया है, इसका बदला जरूर ही लूंगी, लूंगी कब ? कलही लूंगी। यदि तुझे कल ही घर से न निकलवाई तो मेरा नाम तारा नहीं।

(गुन गुनाती हुई चली जाती है)

किशोरी—आज तारा की जबान पर ये बातें कहां से आई। कैसी सीधी साधी सी लगती थी। मुझे क्या मालुम था कि इसके पेट में जहर भी है। नहीं तो इसे अपने पास भी नहीं आने देती। खैर ! कुछ भी हो भगवान ! रक्षा करना।

(उदास भावसे कमरे में टहलने लगती है)

तीसरा खण्ड।

तीसरा दृश्य।

स्थान—राजपुर का रनवास।

समय—प्रभात काल।

(कमला अपने महल में अकेली बैठी है)

कमला—मैं धन्य हूं। जो अपने सामने ही पुत्र कमलकिशोर का ऐसा सौभाग्य देख रही हूं। उसकी नेक चलनी की जगह बेजगह बात सुन पड़ती है। धन्य है पुत्र तुझे जो अपनी जान की पर्वाय न करके दूसरे की मदद करने के लिये रण में गया है। अपनी प्रेमकी रस्सी में तैने सब ही को बांध लिया है, मैं बड़ी ही भाग्य शालिनी हूं जो तो सरीखे पुत्रने मेरी कोख में जन्म लिया। भला ऐसे अच्छे पुत्र को पाकर कौन माता पिता खुश न होते होंगे।

(चुप रह जाती है)

(तारा का प्रवेश)

तारा—महारानी जी की जय हो।

कमला—तारा तू आज किशोरी के यहां न जाकर यहां कैसे आ रही है, और तेरा चहरा उदास कैसे है।

तारा—महारानी जी कुछ कहा नहीं जाता। क्या कहूं।

कमला—तारा कुछ कहो तो सही, क्या हो गया तू इतनी क्यों हिरास हो रही है। क्या बात है?

तारा—कुछ कहते नहीं बनता, ऐसी ही बात है।

कमला—देखो ! तारा तुम मुझसे खुलासा २ बात कहदो डरो मत, मैं तुम्हारी बात को जरूर ही मानूंगी।

तारा—अच्छा महारानीजी कहने योग्य न होने परभी कहती हूं।

(कान में कुछ कहती है)

कमला—हाय रे हाय ! यह क्या हुआ मेरे निर्मल वन्श को बट्टा लगवा दिया, मैंने इसको कभी ऐसी न जानी थी, देखने में तो कैसी भोली भाली दीखती थी। जिसको दूध पिलाया वही अब विष उगलने लगी, मैं ऐसी पापिनी को कभी अपने महल में न रहने दूंगी, इसने पवित्र कुल को कलंकित किया, ऐसी चांडालिनी को अभी घर से निकाल बाहर करूंगी।

तारा तू जाकर राजासाहिब को जल्दी बुलाला।

(तारा का प्रस्थान)

(रतनसिंह आते हैं)

रतन—कहिये रानीजी आज सवेरे ही मुझे क्यों याद किया।

(रानी खड़ी हो जाती है)

कमला—क्या बताऊं ? आपके चन्द्रमा समान निर्मल वन्श को इस पापिनी कुलटा ने कालिमा का टीका लगवा दिया।

रतन—क्या बात हुई साफ २ कहनी चाहिये, ऐसी कौन निडर है जिसने ऐसा साहस किया।

कमला—और कौन है ? वही आपकी पुत्र बधू किशोरी समझो, लो सुनो सारी बातें बतलाती हूं।

(कान में मुंह लगाके कुछ कहती है)

रतन—(क्रोध में आके) खबरदार ऐसी बातें फिर कभी भूल

कर के भी मत कहना, जो कुछ भी तुम कहती हो इसमें सरासर तुम्हारी भूल है। किशोरी ऐसा निन्दित काम कभी नहीं कर सक्ती, वह पतिव्रता और अच्छी तरह सब शास्त्रों को जानने वाली है। हर एक बात में चतुर है और पर पुरुष को भाई बेटे के बराबर गिनती है। वह स्त्रियों में श्रेष्ठ रत्न है।

कमला-अगर आप मेरी बात झूंठ मानते हैं तो रात दिन पास रहने वाली टहलिनी तारा से पूछो उसने खुद आंखों से यह मामला देखा है।

रतन-(तारा से) क्यों तारा तुमने यह बात देखी है। सच २ कहना, वरना तुम्हारी जानकी खैर नहीं।

तारा-मैंने यह बात खुद अपनी आंखों से देखी है, मैं कभी आपके सामने झूठ नहीं बोल सक्ती, अगर मेरी बात में झूंठ निकले तो जो आपके मनमें आवे वही दण्ड दें, मैंने तो आपके हितके ही लिए यह बात आप से कही है, नहीं तो मुझे क्या कहने की जरूरत थी, अब आप जानें सो करें, मैं तो बरी हुई।

रतन-अगर ऐसा ही है तब तो यह बात सोलह आने ठीक मालुम पड़ती है, अच्छा एक बांदी जाकर किशोरी को बुलालाओ।

(बांदी का प्रस्थान)

(किशोरी आती है और राजा रानी के चरण छूकर खड़ी रह जाती है)।

किशोरी—पिताजी क्या आज्ञा है।

रतन—किशोरी तुमने बड़ा भारी पाप किया है, इसलिये तुम अभी हमारे महल से बाहर चाहे जहां चली जाओ।

किशोरी—हैं! पिताजी यह आप क्या बात कहते है?

रतन—बस चुप रहो हम तुम्हारी बात ज्यादा नहीं सुनना चाहते, अब अपनी मीन मेख मत लगाओ, बांदियो जल्दी इसे महल से बाहर कर दो।

(बांदियां पकड़ कर बाहर निकाल देती है)

तारा—(मन मे) इस रांडने कल घमण्ड मे आकर मेरा अपमान किया था, और मुझे अपने महल से ढक्का देकर बाहर निकाल दिया था, आज इस बात का बदला मैंने ले लिया, चलो अच्छा हुआ।

(सबका प्रस्थान)

तीसरा खण्ड।

चौथा दृश्य।

स्थान—आनन्दपुर का एक जंगल।

समय—दोपहर।

(किशोरी अकेली खड़ी विलाप कर रही है)

किशोरी—हाय कल जो मुझे अपशकुन हुए थे। वे सच्चे निकले तारा तुझे मैं ऐसी अधर्मिन नहीं जानती थी। तैने मुझे संसार मे बदनाम किया। घर से निकलवाया, मेरे माता पिता के माथे कलंक का टीका लगवाया। इस समय ऐसे भयानक जंगल मे अकेली निस्सहाय

अबला जिसका संसार भर में कोई भी रक्षक नजर नहीं आता। अकेली खड़ी रोरही है। भगवान् मैंने पूर्व जन्म में ऐसा कौन सा पाप कमाया था। जिसका बदला मुझे अब मिला है।

(रुदन करती हुई गाती है)

॥ लावनी ॥

मैं चली महल से निकल संग ना कोई।
जो घर के थे अब शत्रु हुए हैं सोई॥
मैं कहा करू अब कौन जगह को जाऊं।
दैवने ठगी किसको दुख कथा सुनाऊं॥
मैंने तारा का कपट नहीं था जाना॥
उस पापिन ने हा कैसा किया बहाना॥
जाकर के मो विपरीत सासु समझाई।
वो हत्यारिन मेरा न तरस दुक लाई॥
हा सासु सुसर ने मोकू विपन निकाली।
बिन समझे बूझे मुझे विपति में डाली॥
क्या पूरब भव में मैंने पाप कमाया।
जिसका ही फल हा आज उदय में आया॥
पहले मैंने भी जीव सताये होंगे।
या किसी जीव के प्राण दुखाये होंगे॥
माया कर के बदनामी कीनी होगी।
अब दुःख सहूं मैं बड़ी आपदा भोगी॥
पति पत्नी में या भेद कराया होगा।
या निन्द कार्य को बहुत सराया होगा॥

या बन में जाकर आग लगाई होगी।
या झूंठ बोलकर द्रव्य कमाई होगी॥
अब सकल जगत में अपजस मेरा छाया।
जैसा कीया था वैसा ही फल पाया॥
कोई नाहीं मो दुख में धीर धरैया।
अब "वीर" बताओ को सम बिपति हरैया॥

हाय ! सूर्य कैसी अग्नि वर्षा रहा है। धूप के मारे एक पेंड़ भी आगे नहीं चला जाता। लूहों से सारा बदन जला जा रहा है ! एक दिन वह था जो बड़े २ सुन्दर महलो मे रहती थी। और अनेक दासी दास इशारे पर चलते थे। आज वह दिन है जो मैं ऐसे ऊजड़ भयानक जंगल मे खड़ी हूं। एक चिड़िया भी पास नहीं फटकती ! भगवान् क्या मैं अब इतनी गई बीती होगई हूं ? जगदाधार ! इतना भारी कष्ट मुझसे सहा नहीं जाता। हाय हमारे प्राणनाथ दूसरे की मद्दद के लिये रण में गये हैं। अगर मेरी जीवन रूपी निबल नैया के खेवटिया और मेरे माथे के श्रृंगार आज घर पर होते तो कभी मेरी यह खराब दशा नहीं होती। हे त्रिलोकीनाथ ! अब आपके बिना मुझ दुखिया का इस संकट से कोई रक्षा करने वाला नहीं है।

(विलाप करती हुई गाती है)

चाल—उखड़े न दूध के दांत उमर मेरी कैसे कटे बारी।
दिल कैसे धारूं धीर अकेली फिरती हूं बनमें॥ टेक॥
बड़ी विपति मो शिर पर डारी, सासु सुसर ने विपत निकारी।
करुणा चित में तनिक न धारी, विनती सुनलो संकट हारी॥
अब किसे सुनाऊं हाल बड़ा ही दुःख उठै मन मे॥ दिल०॥

सभी तरह से हूं लाचारी, झेली बड़ी मुसीबत भारी।
आखिर को मैं अबला नारी, विनती सुनलो संकटहारी॥
ऐसी कठिन धूप की पीड़ा कष्ट देइ तन में॥ दिल०॥

दुष्ट दैवने मुझको मारी, उसको लगी बहुत मैं खारी।
दुखियों की तुम विपति विदारी, विनती सुनलो संकट हारी॥
मोह कहा दिखाये दुःख जगतपति इस बालापन में॥ दिल०॥

विपति नशावो मेरी सारी, सदा आपदा तुमने टारी।
सब जीवों के हो हितकारी, विनती सुनलो संकट हारी॥
हा! गये हमारे प्रीतम प्यारे मदद हेत रन में॥ दिल०॥

शरण गहे की विपति निवारी, देर लगाई क्यों त्रिपुरारी।
अब की भी आई है बारी, बिनती सुनलो संकट हारी॥
"वीर" भक्त की विपदा भगवन् आय हरो छनमें॥ दिल०॥

(कर्मों को कोसती है)

बदकार कर्म तू भी अपनी करनी में कसर मत छोड़ना, मुझे हर तरह से तू दुःख दिखाले, या तेरे पापी मन में जितना आवै मुझ दीन निस्सहाय दुखिया को सताले। दुष्ट दैव तू किसी का सुख नहीं देख सकता, हत्यारे तुझे मैं बहुत ही बुरी लगने लगी। तभी तो तेनें एक ग़रीब अबला नारी पर अपने दिल का हौंसला निकाला। देख फिर के लिये कुछ बाकी न रह जाय। खूब बेपीर होकर क मुझ मन्दभागिनी को कठोर और विकराल दुःख यातनायें दिखाले। किसी के सब दिन एक से नहीं रहते बादलों की सी उलटती-पलटती छांह है। मेरे भी कभी शुभ दिन आयेंगे।

(गाती है)

चाल—आज अच्छी तरह तू मुझको सताले जालिम ॥

करम अच्छी तरह तू खूब सताले मुझको।
दुःख की राह कठिन आज चलाले मुझको ॥ टेक ॥
आज अबला ये तेरी खूब मार सहती है।
जो दिखाना हो तुझे दुःख दिखाले मुझको ॥
लखा दुनियां में नहीं पापी बराबर तेरे।
धोंस धमकी तू अपनी खूब बताले मुझको ॥
'वीर' देखेगा तेरी होगी सरारत कब तक।
आज दिल भरके अपना खूब छिकाले मुझको ॥

(एक दम अधीर होकर भगवान को याद करने लगती है) जगन्नाथ ! ये कठिन भूख प्यास और गर्मी की दुस्सह पीड़ा मेरे से अब नहीं सही जाती। करुणासागर ! रक्षा करो। हे अकारणबन्धु ! जिस २ ने आप का नाम लिया उसे आपने घोर दुःख के स्थानों से निकाल कर आनन्दकारी उत्तम २ स्थानों में वास कराया। हे भक्त वत्सल ! जिसने आपको स्मर्ण किया उसका कठिन से कठिन भी दुख क्षणभर में दूर किया। हे दुःख नाशक देव ! अब मेरी बार इतनी देर क्यों। क्या मैं आप की संतान नहीं हूं। जगदाधार ! शीघ्र ही आइये और मो निर्बला दीना हीना असहाया अबला की रक्षा कीजिये। करुणायतन ! तुम्हारे बिना मेरा और कोई नहीं है। हे दीनानाथ अब ज्यादा विलम्ब न करो नहीं तो इस दुखिया का संसार में कहीं ठिकाना नहीं है।

करके बतला तेरे ऊपर ऐसी मुसीबत आने का क्या कारण है।

(जमीन से उठा लेता है)

किशोरी-हां अब मालूम हुआ आप मामाजी हैं। आपने इस समय मुझे दर्शन देकर जीवदान दिया इसलिये आपकी मैं बड़ी आभारी हूं। और किसी का क्या कसूर बतलाऊं मेरे अशुभकर्मों ने ही मेरी यह हालत करदी है। सब दोष मेरा ही है।

सत्य-तो भी क्या बात हुई बतला तो सही।

किशोरी-मामा जी मेरे स्वामी के पीछे सासु-सुसर ने एक तारा टहलनी की झूंठी बात मानकर मुझे कलंकिनी कह के बिना सोचे समझे घर से निकाल दिया है।

सत्य-पापियो तुम्हे हजारबार धिक्कार है। जो ऐसी भोलीभाली सुशीला सदाचारिणी कन्या को घर से बिना सोचे और एक नीच औरत की बात पर विश्वास करके अकेली जंगल में निकाल दी। अधर्मियो तुमको इसका फल जरूर मिलेगा।

किशोरी—मामा जी मेरे सासु ससुर की इसमें कुछ कसर नहीं है। जो कुछ है मेरे पूर्वोपार्जित कर्मों का ही फल है। मुझे बेशक भला बुरा कहलीजिये।

सत्य—(मन मे) अहा कैसी भोली लड़की है। खास शख्सों का कसूर होने पर भी कसूर नहीं बतलाती। विधाता तुम्हारी रचना मे तो शायद ही और दो एक ऐसी बालिका हों (प्रगट) किशोरी तुम सब रंज छोड़दो।

और बड़ी खुशी से ननसाल चलो वहां तुम घर से भी ज्यादा सुखी रहोगी।

किशोरी—मामा जी आपने मुझ कलंकिनी को अपने यहां स्थान दिया अतएव आपसे बढ़कर मेरा कोई हितू नहीं है। मुझे आपके यहां चलने में बिल्कुल भी संकोच नहीं है। मैं तो बालकपन से ही ननसाल में रही हूं।

(दोनों का प्रस्थान)

तीसरा खण्ड।

पांचवां दृश्य।

स्थान—आनन्दपुर से ताल्लुक रखने वाला एक जंगल।

समय—तीसरा पहर।

(कमलकिशोर फकीरी भेष में अकेले खड़े हैं)

कमल—(दुःखकी आहों के साथ) प्राण वल्लभे ! अगर ऐसा ही मैं जानता कि मेरे पीछे तेरी यह दशा होगी तो कभी हर्गिज तुझे छोड़कर मदद के लिये रण में न जाता। शीलाशि मणे ! अब तेरी क्या हालत होगी। तेरे बिना संसार मुझे सूना दीखता है। तैने ये भयानक जंगल के दुख और भूख प्यास की पीड़ा कैसे सही होगी। और यह शरीर को जलाने वाली दोपहर के सूर्य की प्रचण्ड आताप युक्त धूप की वेदना किस तरह से झेली होगी। प्राण प्यारी ! जब से तेरा निकलना सुना है। तब से मेरा वज्र समान धैर्य भी मोम क

तुल्य पिघल कर हृदय से बह गया। और अन्न जल का तब से अभी तक मैंने मुंह भी नहीं देखा। सुख दायिनी प्रिये! अगर तेरे दर्शन न हुये तो ये मेरे प्राण पखेरू शीघ्र ही इस देह रूपी पिंजर से उड़ जायंगे। ठीक तो है। तो सरीखी सुशीला स्त्री के बिना संसार में जीना व्यथा है। क्या करूं! भगवान।

(शोक युक्त होकर के गाता है)

कहां मेरी पियारी है कहां ढूंढूं किधर जाऊं।
किसे जाकर के मैं पूंछूं कहां उसका पता पाऊं॥ टेक
सभी आराम मैंने हेतु जिसके छोड़ दीने हैं।
बिना तेरे मिले प्यारी कभी ना अन्न जल खाऊं॥
फकीरी भेष धारा है समझले बस तेरी खातिर।
तुही सरवस्व है मेरा तेरेही गीत मैं गाऊं॥
अगर ये जानता पहले प्रिया का हाल ये होगा।
पान तो जंग जाने का कभी हर्गिज न मैं खाऊं॥
करी इन्कार मालिन्द ने बराबर रण में जाने की।
कहा मैंने गरव से था समर में हाथ दिखलाऊं॥
उमर बारी अभी उसकी कहा हालत हुई होगी।
इस समय जो पड़ा दुख है किसे जाकर के बतलाऊं॥
किसी भी जन्म में अबतो न ऐसी नारि पाऊंगा।
करी क्यों भूल ये मैंने बड़ा ही इसपै पछताऊं॥
जगत के देव आकर के 'वीर' की कीजिये रक्षा।
आपका नाम दुख नाशक इसी की भावना भाऊं॥

(बैठ जाता है)

हाय अब किसे पूछूं किस से उसका पता लगाऊं अगर किसी ने मेरी प्राण प्यारी को देखा हो बतादो। जिन्दगी भर में उसका अहसान नहीं भूलूंगा। अगर कोई सुनते हो तो जल्दी आओ और मेरे निकलते हुए इन प्राणों को बचाओ। जलचरो अगर तुमने ही देखी होतो तुम्हीं बताओ। क्योंकि गर्मी के जोर से बढ़ी हुई दुखदाई प्यास से सताई जाकर प्यास दूर करने के लिये मत कहीं तुम्हारे सरोवर में ही जलपीने आई हो। थलचरो अगर तुम्हें मालुम हो तो तुम्हीं बतादो। क्योंकि ऐसे दुस्सह भयानक जंगल में जिसके घर कुटुम्ब का कोई भाई बन्धु नहीं है। असहाया तथा अशरणा होकर के तुम्हें ही अपना सब कुछ समझ के शायद तुम्हारी ही शरण में आई हो। नभचरो! तुम्हें तो जरूर ही मालुम होगी। क्योंकि तुमतो सदा आकाश में ही रहा करते हो। सो उस अबला को जाते देखा ही होगा। किधर को गई है जल्दी बताओ। वनके वृक्षो तुम्हीं बताओ। क्योंकि इस असह्य धूपकी गर्मी से व्याकुल होकर शायद तुम्हारे ही नीचे छाया लेने आई हो। अरे! तुम सबके सब ही एक दम से क्यों निर्दयी बन गये हो। बोलते क्यों नहीं। ऐसी निठुरता इस समय क्यों धारण करली ठीक है। विपति के समय कोई भी धैर्य देने वाला नहीं होता।

(रंज के साथ फिर गाता है)

देखी मेरी प्रिया को अगर है कहीं तो बतादो न कोई भी

देरी करो। भूलूं मैं जिन्दगी भर न अहसान ये मेरी विपदा को कोई भी आके हरो॥ टेक॥ मैं विपत में भी गार्दिश का मारा फिरूं, मुझे जल्दी से कोई बचालो सही। मेरी नैया पड़ी है ये मझधार में कोई मल्लाह बनके किनारे धरो॥ जलचरो थलचरो तुमसे पूछूं खड़ा नभचरो तुम बतादो पता नारिका। जानें आके कहां से ये सुख के समय दुःख फन्दा परो दुःख फन्दा परो॥ बिना ऐसी प्रिया के मिले सोचल आज जीने से अच्छा है मरना कहीं। 'वीर' पै भीर है एक दम पड़ रही श्रीपते दुख हरो श्रीपते दुख हरो॥

(उठ कर धीरे २ चलने लगता है)

तीन लोक के रक्षा करने वाले हे त्रिलोकी नाथ। अब मुझसे एक पल भी यह वियोग का दारुण दुख नहीं सहा जाता। हे वसुन्धरे! तूही फटजा जो तेरे अन्दर समाजाऊं। हे आकाश मण्डल तूही गिरपड़ जो तेरे नीचे दबकर सुखकी नींद सो जाऊं। पहाड़ो तुम्हीं टूक २ होकर मेरे ऊपर गिरपड़ो जो इस कठिन दुःख से छुटकारा पाजाऊं। समुद्रो तुमभी क्यों देख रहे हो। तुम्हीं उमड़ आओ जो तुम्हारी धारा में बहकर संसार से बिदा हो जाऊं। वायु मण्डल तूही मेरे ऊपर दयाकर जो अपनी प्रचण्ड हवा के जोर से उड़ाकर कहीं डालदे जिससे इस विरहाग्नि के जलने से बच जाऊं। अरे सब के सब बहरे ही हैं क्या? जो कोई नहीं सुनता। हाय दैव।

(बेहोश होकर के गिर पड़ता है)

(गायों को चराते हुए दो ग्वालों का प्रवेश)

चुन्ना—देखौ मुन्ना वा दिना यां कैसी मलूक लुगाई आई हती। खभरिऐ के नांइ।

मुन्ना—हांरे वाइतौ मैंने अच्छी तरै देखी हती।

चुन्ना—कैसी विचारी रुवेंरुई रोवति डोलती हती।

मुन्ना—भइया हूं तौ वाकौ जानकलि कौ रोइवो सुनिकें योंकौ योंई सूकौ सौ रहिगयौ। कैतौ वांके मालिक नें वाइ घर सूं काढ़ि दई होगी। कै सासुतें न बनी होगी सो लड़िकें चली आई ऐ।

चुन्ना—मेरे मनमें तौ जिआई ऊ हती कै जाइ अपने घरकूं लै चलूं। हूं तौ ऐसौ विचारई करयौ हतौ तौताऊं उतुआ घोड़ा पै चढ़ौ एकु आदिमी आयौ, औरु वाइ घोड़ा पै धरिकें लम्बौ भयौ॥

मुन्ना—घर लैजाइ बेकी तौ वाइ मेरेऊ मनमें आई हती। परि बुतौ वाइ आदिमी एई चोखौ देखिकें वाके संग चली गई। बु पट्ठा तौ अब वाके संग मौज मारतु होगौ। गई तौ जान्दै हमतौ वाहूर के बिना बैठेंई; भलै ऐसं चलौ अब दिनुनायें पौहारिपै लैचलिबेकौ बखतु है गयो ये।

मुन्ना—चलौ हांकौ।

(दोनों का प्रस्थान)

(कमलकिशोर वटके इधर उधर घूमता है।)

(घोड़े पर चढ़े हुए आदमी का प्रवेश)

मनु—(कमलकिशोर से) आप इस लिबास में ऐसे भयानक जंगल में क्यों फिर रहे हैं।

कमल—क्या बताऊं क्यों फिर रहा हूं मेरा, चित्त ठिकाने नहीं है।

सत्य—घबड़ाइये मत बताइये आपका नाम क्या है। आपके वालिद का नाम क्या है? आप वाशिन्दान कहां के हैं। ठीक २ कहिये।

कमल—मेरा नाम क्या है? मेरे बापका नाम क्या है। रहना कहा पर है? क्या २ बताऊं। अबतो मेरा कुछ नाम काम नहीं है। किसको पिता बतलाऊं। जहां गया वहीं मेरा मकान है। घर परिवार कहां बताऊं।

सत्य—आप पर ऐसी क्या आपत्ति आई है जो बताने में भी डर लगता है।

(सत्यसिंह गाता है)

क्यों भेष फकीरी धारोजी बतलाओ महाराज। टेक ॥
किसके हो तुम कुंवर पियारे कहा तुम्हारा नाम ॥
ना शंका चितमें लाओजी बतलाओ महाराज।
सुन्दर नवलकिशोर जी कोन आपका गांव ॥
ना तनिक छिपाओ सच्चा समझाओ जी महाराज।
सूरत से तो तुम दिखो कोई राजकुमार ॥
क्या दुःख पड़ा था भारी दर्शाओ जी महाराज।
क्यों ठण्डी तुम ले रहे स्वासें बारम्बार ॥
मैं पूछ रहा हूं तुमसे चितलाओ जी महाराज।
अब ज्यादा न छिपाइये 'वीर' सुभग सुकुमार ॥
अपना जानो मुझे न शर्माओ जी महाराज ॥

शर्म को छोड़ कर धीरज के साथ सब मामला बयान कीजिये। क्या हुआ।

कमल—इस समय आपको क्या बताऊं क्या मामला हुआ । मालुम होता है कि अबतो मैं थोड़ी देर का महमान और हूं ।

(गाता है)

क्या हाल बताऊं अपना तुमको सारा सरकार ।
कहा बताऊं आपको कौन हमारा गाम ॥
मैं किसका राजकुमार हूं अरु हूं लाचार ।
क्या बतलाऊं इस समय क्या है मेरा नाम ॥
मै कहा बताऊं आपको जी अपना घरबार ।
नीर-समीर फकीर का क्या है कहीं मुकाम ॥
जे जहा चलें बस जिस समय वोही है आधार ।
अब मुझको जो दुःख है मैं जानूं या राम ॥
मेरे दुखका तो देखोजी कुछभी है ना पार ।
सुख भी मुझको हो गया आज 'वीर' दुख धाम ॥
कब प्राण पियारी पाऊगा ये सोचूं हरबार ।
क्या बताऊं कुछ बताया नहीं जाता ॥

(चुप रहजाता है)

सत्य—देखिये मैं कबसे पूछ रहा हूं लेकिन आपके दिल में यह बात बिलकुल ही नहीं आती अब ज्यादा न कहलाइये । और जो कुछ बातहो सभी २ फर्माइये ।

कमल—अच्छा अगर आपको इस बात से कुछ जिद है तो सुनिये । मो कम्बख्त का तो नाम कमलकिशोर है । पिताजी का नाम रतनसिंह जी है । और राजपुर का रहने वाला हूं बस सुन लिया ।

सत्य—मेरा तो सवाल है कि आपने यह फकीरी भेष क्यों धारा है। इसका जवाब दीजियेगा।

कमल—अच्छा यह भी सुनना चाहते हैं तो सुनिये। मेरे पीछे मेरी प्राण वल्लभा रामपुर नरेश श्यामसिंह जी की राजकुमारी को एक तारा नामकी औरत पर विश्वास करके मेरे माता पिताने घरसे निकाल दी है। उसी को ढूंढ़ने के लिये यह भेष धारण किया है।

सत्य—ओहो! बहुत अच्छा हुआ। आप मिल गये। वह भी बेचारी आपकी याद कर करके बहुत रोती है। वह मेरे घर पर है। मैं आनन्दपुर का राजा सत्यसिंह और किशोरी का मामा हूं। अब किसी बातकी फिकर न कीजिये। और आप सारे रंज गमको छोड़कर खुशी खुशी मेरे घर को चलके पवित्र कीजिये। वहां आपको किसी बात का दुख नहीं होगा। इस राज्य को भी आप अपना ही जानकर तसरीफ ले चलिये। और उस बेचारी अवला को धीरज बंधाइये। चलिये देर न कीजिये।

कमल—आपने मुझ गरीब पर बड़ी ही इस समय महर्बानी की, जो जाते हुए प्राणों को बचालिया मैं आपका बड़ा भारी अहसानमन्द हूं। आपके इस उपकार का बदला कभी दे सकूंगा क्या? चलिये।

(बातचीत करते हुए दोनों का प्रस्थान)

(पर्दा गिरता है)

चौथा खण्ड।

पहला दृश्य।

स्थान—राजपुर का राज महल।

समय—प्रभात काल।

(नेत्र हीन बैठे हुए राजा रानी बातचीत कर रहे हैं)

रतन—हाय मैंने बिना सोचे समझे एक नीच औरत की बात मानकर उस सती शिरोमणि पतिवृता स्त्री को घर से निकाल दिया। उस अन्यायकी हम दोनों को शीघ्र ही सज़ा मिल गई। नेत्रों के बिना हम पराधीन हो गये। सारी दुनियां अब तो अन्धकार ही अन्धकार मय दीखती है। ठीक है जो किसी के कोई प्राण दुखाता है वह भी सुखसे नहीं सोता। हाय हमने बड़ा भारी पाप किया भगवान्! क्षमा करो।

कमला—प्राणनाथ आपका इसमें कोई अपराध नहीं है। मुझसे ज्यादा पापिनी इस संसार में और कौन होगी जो अपने घरके आभूषण रूप पुत्र और पुत्रवधू दोनों से ही हाथ धो बैठी। हाय! उस शील की खान निरपराध राजकुमारी को मो हत्यारी ने घरसे निकाल दिया। जिस समय मैंने उस अधर्मिन् तारा की ये बातें सुनी थीं उस समय मैं बहरी क्यों न होगई। किशोरी को इस जीभ से दुर्वचन कहे थे तब इस जीभके टुकड़े २ क्यों न हो गये। अब क्याकरूं किधर की भी नहीं रही। संसार में अब हमारी रक्षा करने वाला कोई नहीं है।

रतन—प्रिये! घबड़ाओ मत अच्छा हुआ इस खोटे कर्म करने का हमको इसी जन्म में नतीजा मिल गया। नहीं तो कितने ही भवो में इस कठिन पाप का फल भोगना पड़ता। अरे कोई है तो सुनो।

सेवक—कहिये श्रीमहाराज क्या आज्ञा है।

रतन—तुम शीघ्र ही जाकर मंत्री धनदेव जी को बुला लाओ। जाओ जल्दी जाओ।

सेवक—जो आज्ञा।

(सेवक का प्रस्थान)

(मंत्री का प्रवेश)

मंत्री—कहिये महाराज इस वक्त ताबेदार को किस तरह याद फर्माया।

रतन—आइये मंत्रीजी साहिब विराजिये (बैठ जाता है) कल-रातको ही स्वप्न मे एक दयामयी देवी ने आकर कहा था कि तुम्हारे पुत्र और पुत्रवधू आनन्दपुर के राजा सत्यसिंह के यहां है। उन्हें बुलवालो। और फिर शहर भर की स्त्रियों से तुम दोनो अपनी २ आंखों में जलके छींटे लगवाओ। जो पति वृता होगी उसके छींटे लगते ही तुम दोनोंके नेत्रों से दीखने लगेगा। इस लिये आप किसी चतुर दूतको दोनों के लेने के लिये आनन्दपुर भेजो। जिससे कुल हाल उन के समझाके जिस तरह हो उस तरह अपने साथ लिवालावे। देखो इस कार्य में देरी न हो।

मंत्री—अभी इस कार्य के लिये किसी होशियार दूत को आनन्दपुर की तरफ रवाना करूंगा। आप निस्संदेह रहें। अब जाने की आज्ञा दो।

रतन—हां पधारिये।

(मंत्री का प्रस्थान)

चौथा खण्ड।

दूसरा दृश्य।

स्थान—आनन्दपुर में किशोरी के रहने का मकान।

समय—दोपहर।

(किशोरी और कमलकिशोर बातें कर रहे हैं)

किशोरी—आप मदद के लिये दुर्गापुर गये थे कहिये किस की विजय हुई?

कमल—विजय तो दुर्गापुर के राजा दुर्गासिंह की होती पर मैंने दोनों में सुलह कराके आपस में प्रेम करवा दिया है। अगर लड़ाई होती तो हजारों मनुष्यों की जान जाती।

किशोरी—यह कार्य तो आपने बहुत ही प्रशंसा योग्य किया। लेकिन मुझ कलंकिनी के पीछे अपने मा बापको क्यों छोड़ दिया।

कमल—तेरे साथ जो अन्याय किया गया था। उसकी शहरके बाहर ही मुझे खबर मिलचुकी थी। सेना को रवाना करके मैं तेरे ढूंढने के लिये चल दिया। और कई दिन बाद पता लगाता हुआ यहां के जंगल में आया। तुम्हारे

महमा साहिब मेरे शुभ कर्म के उदयसे यकायक वहां मिलगये। और तेरी खबर सुनाके निकलते हुए प्राणों को रोका।

(चुप रहजाता है) (दूतका प्रवेश)

दूत—कुंवर साहिब की जय हो।

कमल—कहिये किसलिये तसरीफ लाये हैं।

दूत—आपके लिवाने के लिये।

कमल—क्यों !

दूत—आप दोनों के चले आने के बाद ही अकस्मात् राजा रानी नेत्र हीन होगये। अब वे सब तरह से लाचार हैं। और रात दिन आपकी ही याद किया करते हैं। अगर आपने शीघ्र ही चलकर उनको दर्शन न दिये तो शायद ही उनके प्राण बचें। इस समय आपको देरी करना ठीक नहीं है।

कमल—हाय एक दम यह क्या होगया। हमारे माता पिताकी यह हालत कैसे हुई। मुझसा पापी संसारमें और कोन होगा। जो अपने पूज्य माता पिता की एक तुच्छ बात पर अब तक उनके पास भी न गया। धिक्कार है मुझे। प्यारी (किशोरी से) अब देर करने का मौका नहीं है। शीघ्र ही चलना चाहिये। नहीं तो वक्त चूकने पर पछताना पड़ता है।

किशोरी—जैसी आपकी आज्ञा होगी वही करूंगी।

(सत्यनिष्ठ का प्रवेश)

सत्य—कमलकिशोर जी।

कमल—आइये राजा साहिब-विराजिये।

(बैठ जाता है)

सत्य—सुना है कि आपके माता पिता नेत्र हीन होगये हैं। और आपको बुलाया है।

कमल—हां महाराज यही बात है। अब हम दोनों को जाने की आज्ञा दीजिये। हम आपके बड़े अहसानमन्द हैं। आपने हमारी दुःखों से रक्षा की है और बहुत ही सुख दिया है आपके इस उपकार का बदला हम कभी नहीं देसक्ते।

(गाता है)

तुम्हारी कीर्ति का वरणन जबा से कर नहीं सक्ता।
कभी उपकार का बदला मैं हर्गिज भर नहीं सक्ता॥ टेक॥
आप बन कर हितू कीनी हमारी दुःख से रक्षा।
काम विनदेशके जाये कभी भी सर नहीं सक्ता॥
कृपा रखना सदा हम पर यही है आपसे विनती।
दूसरा आपके विन "वार" को दुख हर नहीं सक्ता॥

महाराज मैं आपकी कहां तक बड़ाई करूं। अगर सहसनाग भी आपके गुणोगान वर्णन करना चाहे तो वह भी कभी नहीं कर सक्ता। मैं तो क्या चीज हूं।

सत्य—कुंवर साहिब आपके यहां रहने से हमें बड़ा आनन्द था। किसी भी बातकी फिकर न थी। अगर आपकी जानेकी ही इच्छा है तो मुझे इसमें क्या उजर है। पर देखो? आप इस घरको हमेशा अपना ही समझना और कभी इसे भूल न जाना और मुझ पर भी सदा कृपा दृष्टि बनाये रहियेगा। आप जैसे सज्जन पुरुष संसार में मिलना दुर्लभ है। (गाता है)

वड़ा आनन्द मिलता था तुम्हारे दर्शसे हमको।
आपके ठहरने से ही बड़ा आराम था हमको। टक॥
आप जैसे कभी सज्जन जगत में मिल नहीं सक्ते।
अगर जानेकी मर्जी है नहीं है कुछ उजर हमको॥
भूल जाना कभी मत तुम समझना घर इसे अपना।
'वीर' विन आपके घर ये दिखै वनसे बुरा हमको॥

कुंवर साहिब आपके बिना अब यह मकान मुझे जंगल सेभी कहीं ज्यादा भयानक मालूम होता है।

कमल—आपके यहां आजतक हमने खूब ही सुख भोगा। अन्त में आप से यही निवेदन है कि आपभी अपने पवित्र मन से इस दास को मत बिसारियेगा। इस सेवक पर महरकी नजर रखना। अब देर अधिक होती है। जाने की आज्ञा दीजिये।

सत्य—वेशक पधारिये लेकिन मेरी बात याद रखना।

(दूतके साथ दोनों का प्रस्थान)

चौथा खण्ड।

तीसरा दृश्य।

स्थान—राजपुर का दरबार।

समय—प्रभात काल।

(नेत्रहीन रतनसिंह और कमला सिंहासन पर विराजमान हैं और मंत्री धनदेव नीचे बैठे हुए हैं)

रतन—मंत्रीजी क्या पुत्र के आने की कुछ खबर है?

मंत्री हां वे आरामबाग में ठहरे हुए हैं। अभी सारा शहर सजाया

जा रहा है । बड़े धूमधाम के साथ कुंवर साहिब को लाये जांयगे ।

रतन—अच्छा उनके लाने में देरी न करो ।

(मंत्री का प्रस्थान)

(बड़ी धूमधाम के साथ कमलकिशोर और किशोरी का प्रवेश)

मंत्री—कुंवर साहिब मय अपनी धर्म पत्नी के पधारे हैं ।

रतन—बेटा कमल—

(दोनों माता पिता के चरण छूते है और राजा रानी दोनो को छाती से लगा लेते हैं)

कमला—बेटी किशोरी मेरे अपराधों को क्षमा करो ।

रतन—मंत्री साहिब अब शीघ्र ही शहर की तमाम कुलीन स्त्रियों को छींट लगाने को आनेदो ।

मंत्री—बहुत अच्छा ।

(क्रम २ से शहर की सारी स्त्रियां आती हैं और राजा रानी की आंखों पर जलके छींटे मारती हैं लेकिन, किसी के छींटों से राजा रानी के नेत्रों को आराम नहीं होता है)

रतन—मंत्री जी और भी कोई स्त्री रही है क्या ? अभी तक हम दोनों में से किसी को नेत्रों से नहीं दीखता । क्या कोई और पूर्ण शीला नहीं है ?

मंत्री—महाराज शहर की कुल स्त्रियां आचुकी है अब केवल एक आपकी पुत्रवधू अवशेष है ।

रतन—बेटी (किशोरी से) तू अब क्यों देरकर रही है । अपने सतीत्वपने की परीक्षा शीघ्र ही दो । जिससे सब को मालुम पड़े ।

(किशोरी उठती है)

किशोरी—(मन में) इस समय मुझे अपने शील की परीक्षा देनी है। भगवत प्रसाद से ही इसमें उत्तीर्ण हो सकूंगी। जगन्नाथ तुम्हारा ही भरोसा है। (प्रगट) हे अशरण-शरण! दीनबन्धो! भगवान्! अगर मैंने कभी स्वप्न में भी मन वचन वा काय से किसी पर पुरुष का चिन्तवन किया हो तो मेरे जलके छींटों के द्वारा पूज्य सासु ससुर के नेत्रों से न दीखे। लेकिन जो मैं शीलवान हूं तो और नहीं जलके छींटे डालते ही इनके नेत्रों से दीखने लगे। जगदाधार! इसमें आपही साक्षी हैं।

(भगवान् का नाम लेती हुई किशोरी जल के छींटे नेत्रों पर मारती है और उसी समय राजा रानी के नेत्रों से दीखने लगता है)

(नैपथ्य से। धन्य है सतियों में श्रेष्ठ बेटी किशोरी तुझे तू इस परीक्षा में उत्तीर्ण हुई। आवाज आती है)

रतन—बेटी किशोरी तू पूर्ण सुशीला है। हमने बड़ा भारी अपराध किया जो बिना सोचे समझे तुझे इतना कठिन दण्ड दिया। बेटी क्षमा करो।

अच्छा (मंत्री से) मंत्री जी सेवकों को भेज कर अपराधिनी तारा और बदकार कोतवाल दुर्जनसिंह को पकड़वा के मंगवाओ।

मंत्री—बहुत अच्छा मैं अभी सेवकों को भेजता हूं।

अरे (सेवकों से) कुछ लोग जाकर शीघ्र ही तारा और दुर्जनसिंह को पकड़ लाओ। (सेवकों का प्रस्थान)

(तारा और दुर्जनसिंह पकड़े हुए लाते हैं और उनको राजा के सामने खड़े कर देते हैं)

रतन—तुम दोनों ने बड़ा भारी अपराध किया है इसलिये इसके बदले तुम्हें प्राणदण्ड देना चाहिये था। पर ऐसा न कर के तुमको जन्म भर के लिये देश निकाले का दण्ड दिया जाता है।

अच्छा (सेवकों से) सेवको इन दोनों को गधे पर चढ़ा और काला मुंह करके अभी शहर से बाहर निकाल दो।

(सेवक लोग दोनों को गधे पर चढ़ा और बुरी शकल करके शहर से बाहर कर आते हैं)

मंत्री—उन दोनों बदकारों को शहर से बाहर निकाल दिया। अब कहिये क्या आज्ञा है ?

रतन—मंत्री जी आज तक मैं खूब राज्य भोग चुका अब मेरे मन में किसी बात की इच्छा नहीं रही है। अब तो इस बची हुई थोड़ी सी जिन्दगी में रागद्वेष रहित वीतराग परमात्मा की भक्ति करूंगा। और इस मानव जन्म को सार्थक बनाऊंगा। अब कमलकिशोर होश्यार भी हो चुका है। इसलिये उसका राजतिलक अभी अपने हाथ से करना ठीक है। कहिये आपकी क्या मर्जी है ?

मंत्री—यह बात तो आपने बहुत ही योग्य कही। अब मुझे भी राज्य कार्य करते २ बुढ़ापे ने आ दबाया है। मैं भी आप की तरह इस विनश्वर शरीर को आज से ही भगवत भक्ति में समर्पण करता हूं।

रतन—बहुत ठीक ! तो आज से आपकी जगह मंत्री पद पर राजकुमार को नियुक्त करता हूं।

(राजा अपने हाथ से कमलकिशोर के राजतिलक करता है और राजकुमार को मंत्री का पद देता है)

(फूलों की वर्षा होती है)

(सब पुरवासियों का जय जय कार करते हुए प्रस्थान)

चौथा खण्ड।

चौथा दृश्य।

स्थान—राजपुर का नया दरबार।

समय—प्रभात काल।

(कमलकिशोर सिंहासन पर विराजमान है और पास ही में नीचे की तरफ मंत्री राजकुमार तथा अन्य सभासद गण अपने अपने योग्य स्थानों पर बैठे हैं)

कमल—मंत्री जी!

राजा—फर्माइये महाराज क्या आज्ञा है?

कमल—इस समय मेरे ऊपर तमाम राज्य का भार एकदम से आगया है। कहिये इसका चलाना कैसे होगा?

राज—आपके पिता जी ने जैसा चलाया है वैसा आपको भी चलाना चाहिये।

कमल—यह ठीक है। लेकिन मुझमें पिता जी के चरणों की धूल के बराबर भी योग्यता नहीं है। अच्छा! राजनैतिक कुछ उपदेश दीजिये कि राजा का कर्त्तव्य क्या है?

राज—जो आज्ञा। लीजिये सुनिये।

१—राजा को चाहिये जहां तक बने दया तथा क्षमा का ही बर्ताव रक्खे।

२—राजा को धर्म के कार्यों में प्रमाद तथा भूल हर्गिज न करनी चाहिये।

३—राजा को गुणवानों की ही संगति करनी चाहिये। और इनकी इज्जत भी करना लाजिम है। गुणहीन मूर्खों को अपने पास में न आने देना ही अच्छा है।

४—राजा को उचित है कि अपने वचनों का सदा पाबन्द रहे। तथा धूर्त्त कपटियों की बातों से बचे। और शत्रुओं से कभी गाफिल न रहे।

५—राजा को सहन शील और सुशील होना परमावश्यक है। क्यों कि जैसा राजा होता है वैसी ही उसकी प्रजा होती है।

६—राजा को हर एक काम सोच विचार के करना चाहिये। और किसी भी कार्य में जल्दी करना ठीक नहीं है। है। क्यों कि अति जल्दी करने से भी कार्य बिगड़ जाते हैं।

७—राजा को अपनी प्रजा पुत्रवत् समझनी चाहिये। और प्रजा को किसी बात का कष्ट न हो ऐसे उपाय करने चाहिये। क्योंकि जिस राजा के राज्य में प्रजा दुख पाती है। उस राज्य का स्वामी अवश्य ही नर्क गामी होता है।

८—राजा को चाहिये कि काम की प्रवृत्ति से इन्द्रियों के वश होकर रात दिन स्त्रियों के फन्दे में ही न पड़ा रहे। और राज काज के समय को शराब पीने तथा शिकार खेलने आदि व्यसनों में ही खराब न किया करे।

९—राजा को अपने राजकी आमदनी फिजूल के कार्यों में न खोकर उसे प्रजाके हितके कार्यों में ही लगाना वाजिब है और उस आमदनी को अपनी नहीं समझना चाहिये।

१०—राजा को साम दाम दण्ड भेद इन नीतियों का सदा अव-
लम्बन करना चाहिये। जिस समय जैसा मौका देखे
उस समय उसी तरह की नीति का प्रयोग करना ठीक
है। ज्यादा क्या कहूं आप खुद ही बुद्धिमान हैं।

कमल—आपका कहना रत्ती २ सत्य है। राजा को उपर्युक्त उप-
देशों पर चलना बहुत ही जरूरी है। अच्छा मेरे तमाम
राज्य में निम्नलिखित आज्ञाओं का पालन किया जाय।

१—तमाम विदेशी अपवित्र सफाखानों को उठाकर उनकी जगह
स्वदेशी औषधालयों की स्थापना की जाय।

२—हरग्राम में देशी विद्यालय स्थापित किये जांय। जिनमें उच्च
श्रेणी की मातृ भाषा हिन्दी तथा संस्कृत साहित्य कृषि
शिल्प आदि विद्याओं पठन पाठन हो।

३—राज्य में कभी देवताके नाम पर जीवका बलिदान न किया
जाय।

४—कोई किसी के धर्म कार्यों में हस्ताक्षेप न करे।

५—हर कोई धर्म वा धन बल को बिगाड़ने वाले मद्य मांस को
त्याग कर स्वदेशी पवित्र वस्तुओं कोही काम में लावे।

६—सब को देश की बनी हुई खादी ही पहननी चाहिये। क्यों
कि दाम थोड़ा लगता है और चलती बहुत है।

७—हर किसी को जहां तक बने नित्य चर्खा कातना चाहिये।

८— अपने राज्य में पैदा हुई चीजो को कभी राज्य से बाहर न
भेजा जाय।

(नैपथ्य से चिरंजीवरहो राजासाहिब आवाज आती है)

(कुछ सेवकों का प्रवेश)

सेवक—महाराज की जय हो।

कमल—कहिये क्या समाचार हैं ।

सेवक—महारानी किशोरी के उदर से अनेक गुणों कर संयुक्त अभी एक पुत्ररत्न की उत्पत्ति हुई है ।

(सब सभासद जय २ कार करते हैं)

कमल—मंत्री साहिब इसी समय कुल कैदियों को छोड़ दिया जाय । और याचकों को सिर्फ राजचिन्हों को छोड़कर मुंहमांगा दान दिया जाय । तथा शहर में हरजगह अनेक तरह के उत्सव मनाये जांय ।

राजा—जो आज्ञा ।

कमल—अच्छा (सेवकों से) गाने वालियों को बुलाओ ।

(सेवकों का प्रस्थान)

(गाने वालियों का प्रवेश)

(पीछे अनेक तरह के बाजे बजते हैं और क्रम २ से नाचने गाने वाली नाचती गाती हैं)

(पहली गाती है)

क्या कहूं "वीर" क्या कहूं "वीर" ॥ टेक ॥
जनमा कुमार सुन्दर शरीर । क्या० ॥
है श्वेत रंग जैसे कि क्षीर ॥ क्या० ॥
मेटे दुखियों की सकल पीर ॥ क्या० ॥
उसके ढिग चाले सुख समीर ॥ क्या० ॥
सो भाग्यवन्त है बड़ा धीर ॥ क्या० ॥
आओ मिल पावें प्रेम नीर ॥ क्या० ॥

(बैठ जाती है)

(दूसरी गाती है)

कुंवर भूपति हमारे का पियारों से पियारा है॥
सकल परजा का ये मानों एक नयनो का तारा है॥ टेक॥
आज आनन्द उपजाया बड़ा ही नभ को इसने।
सभी खुशियां मनाते हैं, अहो शुभदिन हमारा है॥
पूर्वभव मे कमाया है खूब ही पुण्य हम सबने।
हमारे भाग से आया टूट नभसे सितारा है॥
बड़ी रौनक यहां की दीखती सारे शहर भरमे।
"वीर" सबके दिलों से आज बहती प्रेमधारा है॥

(बैठजाती है)

(तीसरी गाती है)

सब गावौ मिलके प्यारे मंगल गान गान गान।
राज दुलारा हुवा है प्यारा जान जान जान। टेक॥
नाचो गावो मोद बढ़ाओ तान सुरीली को दर्शाओ।
ढोलक पर डंका मारो झट से तान तान तान॥
प्रेमभाव को सब दिखलाओ खाओ पीओ मौज उड़ाओ।
अब हरष मनाओ सारे मिलके आन आन आन॥
दुःख मिटाओ सुख उपजाओ बिछुड़े जनको गलेलगावो।
तभी रहेगी प्यारे सबकी शान शान शान॥
खोटे कामों से मुखमोड़ो, परहित में अपना चित जोड़ो।
"वीर" यही है सच्चा मारग मान मान मान॥

(बैठजाती है) (चौथी गाती है)

आज सबको खूब मिल खुशियां मनानी चाहियें।
आनन्द मनमें मानके हँसना हँसानी चाहिये॥ टेक॥
धन्य हैगी ये घड़ी है धन्य दिन ये आजका।
नाना तरह के गीत अब गाना गवाना चाहिये॥

घर घर बजें आनन्द बाजे आज सारे राजमें।
नरनारि को मिल आज तो सजना सजाना चाहिये॥
हर जगह इस शहर मे भारी खुशी की धूम हो।
इन्सान मे तो प्रेम अब बढ़ना बढ़ाना चाहिये॥
एकता मिलमें, घरें सब भ्रात, अपने जान के।
बैर को तो चित्त से घटना घटाना चाहिये॥
"वीर" सबका मन सदा उपकार परही में रहे।
दुख अनाथों का हमें हरना हराना चाहिये॥

(बैठजाती है)

(राजा सबको खूब इनाम देकर बिदा करदेता है)

कमल—अच्छा मंत्री साहिब तमाम आज्ञाओं का फ़ौरन ही पालन किया जाय। अब हम भी महलों को जाते हैं।

राजा—बहुत अच्छा महाराज।

(राजाके साथ सब सभासदों का जय २ कार करते हुए प्रस्थान)

चौथा खण्ड।

पांचवां दृश्य।

स्थान—कमलकिशोर का शयनागार।

समय—सायंकाल

(उदास भाव से एक चटाई पर कमलकिशोर और मंत्री राजकुमार बैठ कर बातें कर रहे हैं)

कमल—पितृ बियोग के बराबर और दारुण दुःख कोई नहीं है। हाय! जिनके हाथों से पलकर इतना बड़ा हुवा। वे अब इस संसार में नहीं दीखते। पिताजी क्या हमसे कोई

कशूर होगया जो गुस्सा होकर चले गये । या आपके पवित्र चरणों की ठीक तरह मुझसे सेवा न हुई जिससे उदास होकर देवलोक को प्रयाण करगये। हे तात! मैं तो आपका आज्ञाकारी पुत्र था। आजतक मैंने कभी जानकर आपके हुक्म को नहीं टाला। आपका तो मेरे ऊपर पूर्ण प्रेम था। पिताजी! एकदम से इस नेह की डोर को आपने कैसे तोड़दी। आपतो दुःख की जगह छोड़ सुखके स्थान पर चले गये। लेकिन मुझे महा संकट में डाल गये। आपके विना अब दिल को तसल्ली नहीं होती। क्या करूं। भगवान् मुझे भी पूज्य पिताजी के पास पहुंचादो।

(रोने लगता है)

राज—राजा साहिब दिल को तसल्ली दीजिये। आप अनेक शास्त्रों के जानकार होने पर भी अपने मुंह से कैसी बातें कहरहे हैं। देखो दुनियां में सदा अमर कोई नहीं रहता। जो पैदा हुवा है वह एक दिन अवश्य ही मरेगा। इस कालके सामने किसी का वश नहीं चलता। बड़े बड़ों को भी इसने अपने मुख का पान बनाया है। देखिये भरत चक्रवर्ती जो छह खण्ड के मालिक थे। जिनका वज्र के समान शरीर था। और सुन्दर २ छयानवे हजार स्त्रियां थीं। जिनकी सेवा में सैकड़ों देव आठों पहर हाथ जोड़े खड़े रहते थे। उनकी इस शैतान काल के आगे कुछ न चली। इसीने राम लक्ष्मण हनूमान कुंभकरण मेघनाथ रावण सरीके प्रतापियों को और कृष्ण अर्जुन भीम युधिष्ठिर अभिमन्यु द्रोणाचार्य

कर्ण समान बल वान और विख्यात् धनुर्धारियों को अपना कलेवा बना लिया। तो आज कल के अल्पायु अल्प वीर्य वाले पुरुषों की तो बात ही क्या है। सूर्य ही को देखो निकलते उसका कैसा रूप होता है और और डूबते समय कैसा। विचारने से मालुम होता है कि एक चीज उसी अवस्था में सदा मौजूद नहीं रहती. अपने काल को पाकर के पल्टा खा या करती है। मेरी समझ मे तो यह सारा संसार ही बिल्कुल असार भाषता है। इसमे कोई किसी का सगा नहीं है। माता पिता भाई बन्धु सब मतलब के साथी हैं। यह दुनियां एक सराय के बराबर है। जैसे सराय में आदमी थोड़े समय के लिये बसेरा लेने के वास्ते आते हैं। और सुबह होते ही अपना रस्ता पकड़ते हैं। इसी तरह यहां भी यह जीव माता पिता भाई बाहिन पुत्र पुत्री आदि के रूप में एक घर में थोड़े दिनों के लिये आता है। और आयु पूर्ण होने पर दूसरी जगह चला जाता है संसार की मोह ममता सब झूठी है।

(चुप रह जाता है)

(नीचे से कुछ आदमी गाते हुए जाते हैं)

गज़ल सोहनी।

जिन्दगी का क्या भरोसा सोच तो नादान नर।
अन्त को जाना पड़ेगा है नहीं क्या कुछ खबर ॥ टेक ॥
अपना समझता है जिसे हर्गिज न वह तेरा कभी।
१। किसी का धन खजाना है किसी का ये.न घर ॥

अश्व हाथी पालकी रथ हैं भला किसके बता।
दास दासी है न कोई है न ये तेरा नगर॥
पुत्र नारी मित्र क्या कोई कुटुम् परिवारका।
वे हैं न तेरे तून उनका ध्यान में सोचे अगर॥
मतलबी संसार है कोई सगा साथी नहीं।
आज तक तैंने न जाना भूल है तेरी मगर॥
कांच जैसी देह है ये नाश तो होगी कभी।
क्या सुना तैंने रहा जग में सदा कोई अमर॥
धनवान निर्धन मूर्ख ज्ञानी एक दिन सब ही मरें।
काल से जीवत रहे हैं विश्व में क्या चर अचर॥
राह धीधी ढूंढले अब तक बहुत भूला फिरा।
"वीर" अपनी देह से बस एक पर उपकार कर॥

कमल—बेशक अब मेरी समझ में आया कि इस संसार में कोई किसी का नहीं है। सब मतलब के साथी हैं। इस विनश्वर शरीर से जरूर ही दूसरों का उपकार करना चाहिये। इस दुनियां की उलटी रीति है जो कल सुखी था। आज वोही महा दुखी है। कल जो सबके ऊपर हुक्म चलाता था। इस समय वोही एक एक दाने के लिये दर दर मारा मारा फिरता है। आदमी को चाहिये कि इस थोड़ी सी जिन्दगी में मन वचन काय से किसी की बुराई न सोचे न करे और न किसी जीव का दिल ही दुखावे। सबको अपने समान जानना चाहिये। हर किसी प्राणी को प्रेम करना लाज़िमी है। इस संसार में दूसरों का उपकार करना ही श्रेष्ठ है। इसीसे अनेक सुख की प्राप्ति होती है। और इस संसार में कुछ सार नहीं है।

मैं तो अब इस शरीर से एक पर उपकार ही करूंगा।
(अच्छा मंत्री जी अब हम और आप मिलके एक गीत गावें)
(दोनों मिल के गाते हैं)

चाल—उखड़े न दूध के दांत उमर मेरी कैसे कटे बारी।
हो गया हमें मालूम जगत का झूठी माया है॥ टेक॥
बड़े ठाट से जो रहते हैं, नौकर सब औझड़ सहते हैं।
सदा भलाई भी चहते हैं, शीघ्र होत जो कुछ कहते हैं॥
देखो मर्घट में अब उनकी जलती काया है।
सदा मजा जिसने लूटा है, सच को भी कहता झूंठा है॥
भाग उसी का अब फूटा है, घर परिवार सभी छूटा है।
सब कुछ उस से छीन उसे दर दर भटकाया है॥
वज्र सरीखे तन थे जिनके, किसी चीज की कमी न इनके।
बाग बगीचा सब कुछ तिनके, साथी रहे नहीं कुछ दिन के॥
सुभट काल ने ऐसों को भी आन दबाया है।
धन दौलत का मान न करना, विषय कषायन मनमें धरना॥
विपति गरीबों की नित हरना, आखिर को तो होगा मरना।
उपकारी पुरुषों ने ही सच्चा सुख पाया है॥
जिनको डर है गर इसजगका, तनिक सुखोंका या इसठगका।
सुनो "वीर" जो तुम्हें सुरगका, या मनहो पाना शिवमगका॥
दया रखो नित चित्त यही ऋषियों ने गाया है।

(गाते हुये दोनों का प्रस्थान)

(पर्दा गिरता है)

सुरेन्द्रचन्द्र जैन, 'वीर' पद्मावती पुरवाल मु० नगला सरूप
पो० अहारन जि० आगरा निवासी कृत।

कमलकिशोर नाटक समाप्त।